# चौथी दुनिया

हिंदी का पहला साप्ताहिक अखबार

www.chauthiduniya.com



**गडकरी का एजेंडा**

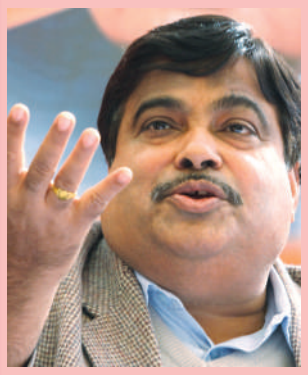

पेज 3

**गोरखालैंड की कठिन डगर**

पेज 4

**महिला सरपंचों पर अत्याचार**

पेज 5

**साईं की महिमा**

पेज 12



मूल्य 5 रुपये

दिल्ली, 4 जनवरी–10 जनवरी 2010

# राहुल जी, सी पी जोशी जी पर ध्यान दीजिए

फोटो– *प्रभात पाण्डेय*

**संप्रग सरकार ग्रामीणों को रोज़गार उपलब्ध कराने की कई योजनाएं चला रही है, इस योजना का सारा दारोमदार ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्रालय पर है. इस मंत्रालय पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है. सीपी जोशी इस मंत्रालय के मंत्री हैं. सरकारी योजनाओं के ज़रिए पंचायतों का विकास और संप्रग सरकार की नरेगा जैसी पायलट प्रोजेक्ट में भारी संख्या में अनियमितताओं की ख़बर आ रही है. सीपी जोशी यह दावा करते हैं कि वह सोनिया गांधी और राहुल गांधी के बहुत क़रीबी हैं. शायद इसकी दुहाई देकर ही वह मंत्रालय के कामकाज पर कम ध्यान देते हैं. सेलिब्रिटी राजनेता बनने की चाहत रखने वाले सीपी जोशी की दिलचस्पी भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की राजनीति में ज़्यादा है! उन्होंने हाल ही में राजस्थान क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष पद का चुनाव जीता है. उनके पास ग्रामीण विकास और सरकारी योजनाओं के लिए ज़्यादा वक़्त नहीं बच पाता है. इन योजनाओं का रिश्ता देश के ग़रीब, मज़दूर और गांव में रहने वाली भोलीभाली जनता से है. इसलिए देश की अति महत्वपूर्ण योजनाओं के प्रति उनकी उदासीनता चिंता की बात है. क्या राहुल गांधी जी का ऐसे मंत्री पर ध्यान नहीं जाता?**

रूबी अरुण

ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री सी पी जोशी पर यूपीए सरकार की सबसे मज़बूत योजना नरेगा यानी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार योजना की ज़िम्मेदारी है. यही वह योजना है, जिसकी मार्केटिंग करके कांग्रेस दोबारा सत्ता हासिल कर सकी. ज़ाहिर है इस योजना में कोई भी कमी या शिकायत न केवल यूपीए सरकार के कामकाज के रिपोर्ट कार्ड को ख़राब करती है, बल्कि सरकार के मुखिया मनमोहन सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी की छवि को भी धूमिल करती है. कहने की ज़रूरत नहीं कि ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्रालय और इसके मंत्री दोनों सरकार के लिए ख़ास मायने रखते हैं. पर जोशी की सुस्ती की वजह से इस मंत्रालय पर संदेह की उंगलियां उठ रही हैं. सरकार की महत्वाकांक्षी योजना नरेगा भ्रष्टाचार का अड्डा बनकर रह गई है. एक तरफ़ कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी सामाजिक विकास के आदर्श नायक की भूमिका निभाने के प्रयत्न में अरसे से यह आलाप कर रहे हैं कि भ्रष्टाचार की वजह से सरकार का दिया पैसा आम आदमी तक एक रुपये में महज़ 15 पैसा ही पहुंचता है. तो दूसरी तरफ़ सी पी जोशी अपने कामकाज से साबित कर यह दिखा भी रहे हैं कि ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री बनने के बाद से अभी तक वह ऐसी सशक्त और प्रभावी व्यवस्था क़ायम करने में नाकाम रहे हैं, जिससे मज़दूरों तक उनका पूरा पारिश्रमिक सुरक्षित तरीक़े से पहुंच सके. पूरी व्यवस्था में पारदर्शिता का घोर अभाव है. जोशी के कार्यभार संभालने के बाद से देश के लगभग उन सभी राज्यों से जहां नरेगा प्रभावी है, शिकायतों का अंबार लगा है. पंचायत स्तर पर भरपूर लूटखसोट मची है. बिहार जैसे राज्य से मज़दूरों का पलायन फिर ज़ोर पकड़ चुका है. पिछले दिनों हालात कुछ सुधरे थे. काम और रोटी मिलने से मज़दूरों के पलायन दर में कमी आई थी, पर ग्रामीण विकास मंत्रालय की अक्षमता से न अब काम के अवसर मिल रहे हैं और न ही उचित मज़दूरी.

यह दुःखद हालात तब हैं, जबकि नरेगा का अपरोक्ष नेतृत्व राहुल गांधी कर रहे हैं. सी पी जोशी को भी उनका संरक्षण प्राप्त है. राहुल गांधी के ख़िदमतगारों में जोशी ख़ास जगह रखते हैं. केंद्रीय मंत्री बनने से पहले जोशी अपने गृह प्रदेश राजस्थान में ग्रामीण विकास और शिक्षा मंत्री रहे हैं. कहते हैं कि वह तब तक कार्यकुशल मंत्री माने जाते थे, पर केंद्रीय मंत्री बनने के बाद जोशी की कार्यकुशलता का आलम यह है कि वह न सिर्फ़ राहुल गांधी की महत्वाकांक्षी योजना को पलीता लगा रहे हैं, बल्कि कांग्रेसजनों के उस सपने के पूरा होने में भी रोड़ा बन रहे हैं, जिसमें राहुल गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में देखा जा रहा है.

**जोशी के कार्यभार संभालने के बाद से देश के लगभग उन सभी राज्यों से जहां नरेगा प्रभावी है, शिकायतों का अंबार लगा है. पंचायत स्तर पर भरपूर लूटखसोट मची है. बिहार जैसे राज्यों से मज़दूरों का पलायन फिर ज़ोर पकड़ चुका है.**

डॉ. सी पी जोशी बुद्धिजीवी माने जाते हैं. एक विद्वान नेता. पर उनकी सबसे बड़ी ख़ामी यह है कि वह सोचते बहुत हैं. उन्हें नज़दीक से जानने वाले तो यह भी कहते हैं कि वह सिर्फ़ सोचते ही हैं. लिहाज़ा सामाजिक विकास की योजनाएं ज़मीन पर उतर ही नहीं पातीं. वे जोशी की सोच में ही दम तोड़ देती हैं. योजना आयोग के आंकड़े इसकी गवाही भी देते हैं. 2007–08 में नरेगा की राशि का 82 फ़ीसदी हिस्सा राज्यों में ख़र्च हुआ, जबकि 2008–09 में सिर्फ़ 72 फ़ीसदी ही ख़र्च हुआ. जबकि नरेगा कोष की राशि में पूरे 19 फ़ीसदी की बढ़ोतरी कर दी गई थी. यूपीए के लिए नरेगा कितनी महत्वपूर्ण योजना है, इसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि पूरी राशि ख़र्च न होने के बावजूद 2009–10 का नरेगा का बजट 39,100 करोड़ रुपये कर दिया गया है.

लेकिन जोशी को इस बात की फ़िक्र नहीं है कि वह नरेगा की समूची व्यवस्था और प्रणाली को किस तरह दुरुस्त करते, ताकि यूपीए शासनकाल में आम आदमी को उसका पूरा फ़ायदा मिल सके. जोशी तो राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन और राजस्थान प्रदेश कांग्रेस की राजनीति में धूनी रमाए बैठे हैं. हालांकि ज़ुबानी तौर पर सी पी जोशी मानते हैं कि नरेगा के तहत वह श्रमिकों का नियमित भुगतान नहीं कर पा रहे हैं. इसकी वजह वह ग्रामीण डाकघरों की व्यवस्थागत ख़ामियां बताते हैं. कहते हैं कि उनके पास पैसा वितरण करने की उचित प्रणाली नहीं है. ग्रामीण डाकघर साधनविहीन हैं, पर अपने कार्यकाल में नरेगा के असफल होने और इसमें भ्रष्टाचार का बोलबाला होने का ठीकरा


(शेष पृष्ठ 2 पर)

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने हाल ही में एक संबोधन में बाबुओं को सरकार के संकल्प की घुट्टी पिलाई. उन्होंने उन्हें परंपरागत प्रशासनिक तौर-तरीक़ों को छोड़कर सरकार के नागरिक केंद्रित रवैये का अनुसरण करने को कहा.



# दिल्ली का बाबू

दिलीप चेरियन

## चौराहे पर बाबू

अब जबकि हम वर्ष 2010 में क़दम रखने जा रहे हैं तो यह देखना काफ़ी मोहक होगा कि इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में भारतीय बाबूगीरी ने कैसा प्रदर्शन किया और यह कहां जा रही है?

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने हाल ही में एक संबोधन में बाबुओं को सरकार के संकल्प की घुट्टी पिलाई. उन्होंने उन्हें परंपरागत प्रशासनिक तौर-तरीक़ों को छोड़कर सरकार के नागरिक केंद्रित रवैये का अनुसरण करने को कहा. डॉ. सिंह के उक्त शब्द ऐसे किसी भी व्यक्ति के कान में मिश्री घोल सकते हैं, जो भ्रष्टाचार से आहत है. अक्षमता और लाल फीताशाही दो ऐसी चीज़ें हैं, जिन्होंने हाल के दिनों में हमारे मन में बाबुओं की एक अलग छवि सी बना दी है और ज़ाहिर तौर पर राजनीतिक व्यवस्था के प्रति भी. नौकरशाही के राजनीतिकरण के उदाहरण इस क़दर बढ़ते जा रहे हैं कि बाबू लोगों की नेताओं के साथ साठगांठ काफ़ी बढ़ गई है. उनसे डरने का भी कोई सवाल नहीं है. बाबू लोग चंद टुकड़ों की ख़ातिर नेताओं के पिछलग्गू बने रहते हैं. इस कारण वे आम लोगों से दूर होते चले जा रहे हैं.

वे नए ज़माने के बाबू हैं, जिन्हें हम उभरता देख रहे हैं. प्रधानमंत्री ने बदलाव के वाहक के रूप में बाबुओं की जैसी परिकल्पना की है, उससे वे कोसों दूर हैं. या फिर सिविल सेवा की शुरुआत करते वक़्त अंग्रेज़ों ने जैसी परिकल्पना की थी, स्टील फ्रेम की मज़बूत वस्तु बने बैठे हैं. ज़ाहिर है कि भारतीय नौकरशाही में जैसी व्यवस्था घर बना चुकी है, उसमें निरंतर बदलाव नामुमकिन है. बग़ैर किसी राजनीतिक इच्छाशक्ति के ऐसा न तो केंद्र में संभव है और न ही राज्यों में. ख़ासकर राज्य के स्तर पर तो नौकरशाही एक बड़ी चुनौती बनकर खड़ी है. सालों से राजनीतिक क्षत्रप उन्हें अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं. स्थानीय बाबू लोग अपने अतीत के स्वरूप की अजीब पैरोडी भर बनकर रह गए हैं. राज्यों में पिछले एक दशक में जो सबसे घातक परिवर्तन आया है, वह राज्य की नौकरशाही का बढ़ता राजनीतिकरण है. इन सबके बीच अपने आकाओं के प्रति बाबुओं की जातीय वफ़ादारी बढ़ती ही जा रही है. इसे भी ज़्यादा स्पष्ट तौर पर राज्यों में देखा जा सकता है. संविधान में सिविल सेवा के जिस स्वतंत्र और निष्पक्ष स्वरूप की परिकल्पना की गई थी, उस पर मौत का ख़तरा मंडरा रहा है. और, ऐसा सभी जगह हो रहा है.

मेरा मानना है कि 2010 भारत के लिए विभाजक वर्ष होगा. यह 2010 से ही तय होगा कि पिछले दशक के दौरान हमने अपनी जिन क्षमताओं को महसूस किया, क्या अगले दशक में हम उन्हें हासिल कर पाएंगे या अपनी अंदरूनी अथवा बाहरी कमज़ोरियों की वजह से इसमें नाकाम हो जाएंगे. नौकरशाही को सुधारने के उपाय के तौर पर विकेंद्रीकरण और कटौतियों के बारे में काफ़ी कुछ कहा गया है.

भारतीय नौकरशाही को लेकर मैं एक परेशानी महसूस करता हूं. दरअसल यहां बाबुओं की तादाद बहुत ज़्यादा है. आख़िरकार हमारी ज़रूरत भी तो यही है कि बाबुओं की संख्या तो कम हो, लेकिन वे ज़्यादा सक्षम हों. और हां, उनकी तनख्वाह भी अच्छी हो.

# राहुल जी, सी पी जोशी जी पर ध्यान दीजिए

पृष्ठ एक का शेष

वह राज्य सरकारों के माथे फोड़ते हैं. बकौल जोशी, प्रदेश सरकारें नरेगा को लेकर गंभीर नहीं हैं. नरेगा के कार्यान्वयन में जितनी भी कमियां हैं, वे प्रदेश सरकार की काहिली की वजह से हैं. हां राजस्थान पर ज़रूर सी पी जोशी की कृपा है. बावजूद उसके वहां भी नरेगा का हाल बुरा है. राजस्थान के लगभग सभी ज़िलों से नरेगा श्रमिकों के एक साल के बकाया भुगतान और निर्माण कार्य में गड़बड़ियों की शिकायतें ख़ूब आई हैं. कुछ मामलों में जांच की जा रही है. बाक़ी मामले सी पी जोशी के ठंडे बस्ते में पड़े हैं. सरकारी पैसे के दुरुपयोग की बात तो बेहद आम है.

हालांकि सी पी जोशी को इस बात का बड़ा गुमान है कि उनके मंत्रालय को ख़ुद राहुल गांधी दिशा दे रहे हैं, पर महामना डॉ. सी पी जोशी आप क्या कर रहे हैं? देश के दूसरे राज्यों में नरेगा की जो दुर्दशा हो रही है उसे छोड़िए, आपके प्रदेश में ही नरेगा की ऐसी-तैसी करने में अधिकारी लगे हैं. उदाहरण के तौर पर आप मिठौरा विकासखंड के ग्राम भागाटार को ही ले लीजिए. जहां के निवासियों ने बड़ी मशक्कत से आप तक यह शिकायत पहुंचाई कि संबंधित अधिकारी और ग्राम प्रधान मज़दूरों का शोषण कर रहे हैं. उनकी मज़दूरी से अपनी जेब भर रहे हैं. पिछले दो सालों से वहां के मज़दूरों को चार से छह दिन ही काम मिला है. आपने क्या कर लिया? वहां हालात आज भी वैसे ही हैं. पीड़ित और शोषित.

वैसे ज़ुबानी जमा ख़र्च के तौर पर आपने भरोसा ज़रूर दिया था कि पारिश्रमिक भुगतान में पारदर्शिता के लिए आप नए विकल्प आज़मा रहे हैं. तो जोशी जी! क्या हुआ उन विकल्पों का? आपके संसदीय क्षेत्र भीलवाड़ा के दलित मज़दूर दलित अधिकार मोर्चा बनाकर अपने अधिकारों की जंग लड़ रहे हैं. पर उन्हें आपका मंत्रालय सहयोग करना तो दूर, उनकी पीड़ा पर कान तक नहीं दे रहा है. अब ऐसी दु:खद स्थिति में कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी करते रहें दलितों के घरों का आधी रात में दौरा. बिताएं उनकी टूटी- झूलती खाटों पर रात. आपकी बला से. आप तो बस इससे ही ख़ुश हैं कि आप राहुल बाबा के नज़दीकी हैं. आपका कोई क्या बिगाड़ लेगा. पर जोशी जी, आप अपने इन नायाब कारनामों से राहुल गांधी का भविष्य ज़रूर बिगाड़ देंगे. उनकी मां सोनिया गांधी का सपना भी तोड़ देंगे और उदारवादी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को आम आदमी की नज़र में झूठा यक़ीनन साबित कर देंगे.

यूपीए सरकार के तुरुप के पत्ते नरेगा में हो रही धांधली और हेराफेरी से ग्रामीणों की नाराज़गी इतनी बढ़ चुकी है कि सरकार से मायूस ग्रामीण अब ख़ुद ही ग़बन और धांधलियों की सीडी बनाकर ज़िला कलेक्टर को सौंप रहे हैं. कल्याणपुर के ज़िला कलेक्टर रवि जैन ने ग्रामीण विकास मंत्रालय में ग्रामीणों द्वारा भेजी गई ऐसी ही सीडी शिकायतों के साथ जमा कराई गई है. ग्रामीण विकास मंत्रालय के अधिकारी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि शासन की व्यवस्था कुछ होती है और धरातल की कुछ. 100 दिनों के रोज़गार की गारंटी की बात ज़रूर की जाती है, पर हक़ीक़त में यह 25-30 दिनों में ही सिमट जाती है.

राज्यसभा के शीत सत्र में प्रश्नकाल के दौरान पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. सी पी जोशी ने भी यही जानकारी दी कि वर्ष 2008-09 में नरेगा के तहत 15 करोड़ लोग काम करने के हक़दार थे, पर काम महज़ 14 प्रतिशत लोगों ने ही किया. वजह यह बताई कि चूंकि अभी नरेगा के तहत शारीरिक श्रम के काम ही हो रहे हैं. इसलिए ज़्यादातर लोग इससे जुड़ना नहीं चाहते. न्यूनतम दिहाड़ी की राशि का कम होना भी एक बड़ा कारण है. लिहाज़ा सरकार ने दिहाड़ी 100 रुपये प्रतिदिन करने का निर्णय लिया है.

पर यहां मूल सवाल फिर अपनी जगह क़ायम है. जब तक नरेगा को कार्यान्वित करने वाली पूरी प्रणाली सुदृढ़ और पारदर्शी नहीं बनेगी. नरेगा आम आदमी के किसी काम की नहीं, बल्कि दिहाड़ी की रक़म बढ़ने से घोटालों की तादाद बढ़ने का संशय ज़रूर है. सी पी जोशी इस सवाल पर फिर अपना रटा-रटाया जुमला आश्वासन का जामा पहनाकर दोहरा देते हैं, हम पूरी प्रक्रिया निष्पक्ष और पारदर्शी बनाएंगे. ज़्यादा पुख्ता विकल्पों को आज़माएंगे. चलिए जोशी जी, हम एकबारगी फिर आपकी बातों का यक़ीन कर लेते हैं, पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी को आप पर भरोसा नहीं है, क्योंकि वह इस वास्तविकता से भलीभांति वाक़िफ़ हैं कि नरेगा की कलई खुलना यानी कि यूपीए सरकार का पतन होना. और, इसीलिए मनमोहन सिंह ने बेहद सख्ती के साथ आपके मंत्रालय का रिपोर्ट कार्ड आपसे मांगा है. साथ में आपकी भविष्य की उन योजनाओं का लेखाजोखा भी मांगा है, जिनके बूते नरेगा यूपीए के आम आदमी के लिए वाकई कल्याणकारी हो सके. राहुल गांधी जिस तरह नरेगा का गुणगान करते हैं और उसकी सफलता के किस्से सुनाकर विरोधियों को चित करने का पासा फेंकते हैं, वह वार राहुल गांधी के गले की ही फांस न बन जाए.

ruby@chauthiduniya.com

फोटो- प्रभात पाण्डेय

## नरेगा पर नियंत्रण के लिए लगन जरूरी

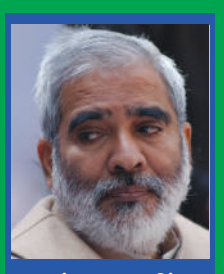

रघुवंश प्रसाद सिंह
पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री

पूर्व केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री रघुवंश प्रसाद सिंह कहते हैं कि नरेगा इतनी बड़ी और विस्तारित योजना है कि इस पर नियंत्रण रखने के लिए भी ख़ासी मेहनत और लगन की ज़रूरत है, जो फ़िलहाल ग्रामीण विकास मंत्रालय नहीं कर पा रहा है. रघुवंश प्रसाद सिंह ने भ्रष्टाचार, अनियमितता, निर्माण कार्यों में गड़बड़ी, मज़दूरी में हेरफेर की आशंका के मद्देनज़र ही एक सुदृढ़ रूपरेखा तैयार की थी, जिसकी मदद से इन सभी गड़बड़ियों पर नज़र रखी जा सकती थी. सी पी जोशी ने उन सभी अनुशंसाओं को रद्दी की टोकरी में डाल रखा है. रघुवंश प्रसाद सिंह ने अपनी अनुशंसाओं में कहा था कि नरेगा को सुदृढ़ और भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए राज्य सरकारों, केंद्रीय रोज़गार गारंटी परिषद के सदस्यों, पेशेवर लोगों, शिक्षकों, सार्वजनिक प्रतिनिधियों, नागरिक समाज के संगठनों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ व्यापक परामर्श समिति बनानी होगी. विकेंद्रीकरण, पारदर्शिता और सार्वजनिक ज़िम्मेदारी को सुदृढ़ बनाना था. पारदर्शिता के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और नरेगा के तहत श्रमिकों के अधिकारों को सबल बनाना तथा नरेगा के ज़रिए टिकाऊ विकास जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान देना था. जिन ख़ास पहलों की बात की गई थी, वे निम्नलिखित हैं:

- चयन समिति की सिफ़ारिश पर राज्य सरकार ज़िला स्तर पर लोकपाल नियुक्त करेगी. लोकपाल नागरिक समाज का जाना-माना व्यक्ति होगा, जिसे सार्वजनिक प्रशासन, विधि, शिक्षा, सामाजिक कार्य या प्रबंधन के क्षेत्र का अनुभव होगा.
- लोकपाल मौक़े पर जांच करने, ग़लत कार्य करने वालों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज़ कराने और अनुशासनात्मक एवं दंडात्मक कार्रवाई करने के निर्देश देगा. साथ ही लोकपाल मासिक तथा वार्षिक रिपोर्ट भी भेजेगा.
- ग्राम पंचायतों को हर छह माह में सामाजिक लेखा परीक्षण कराना होगा.
- नरेगा की प्रगति रिपोर्ट की निगरानी चिन्हित किए गए 100 प्रतिष्ठित नागरिक करेंगे.

पर, इन अनुशंसाओं पर ग़ौर करने की ज़हमत सी पी जोशी नहीं उठा रहे. वह अपनी चाल में मस्त हैं और नरेगा भ्रष्टाचार के दलदल में नेस्तनाबूद हो रही है.

चौथी दुनिया
देश का पहला साप्ताहिक अखबार

वर्ष 1 अंक 43,
दिल्ली, 4 जनवरी-10 जनवरी 2010

संपादक
संतोष भारतीय

मैसर्स अंकुश पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशक रामपाल सिंह भदौरिया द्वारा जागरण प्रकाशन लिमिटेड डी 210-211 सेक्टर 63, नोएडा उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं के- 2, गैनन, चौधरी बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली 110001 से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय

के -2, गैनन, चौधरी बिल्डिंग
कनॉट प्लेस, नई दिल्ली 110001
कैंप कार्यालय एफ-2, सेक्टर -11, नोएडा
गौतमबुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201301

फोन न.
संपादकीय 011-23418962
विज्ञापन + 0120-4783999
प्रसार + 91 9810017924
फैक्स न. 0120-4783950

पृष्ठ-16 (+4 बिहार व झारखंड)

चौथी दुनिया में छपे सभी लेख अथवा सामग्री पर चौथी दुनिया का कॉपीराइट है. बिना अनुमति के किसी लेख अथवा सामग्री के पुन: प्रकाशन पर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी.

समस्त कानूनी विवादों का क्षेत्राधिकार दिल्ली न्यायालयों के अधीन होगा.

भूल सुधार : चौथी दुनिया के 28 दिसंबर 2009-3 जनवरी 2010 के अंक में वर्ष 1 के स्थान पर भूलवश वर्ष 2 प्रकाशित हो गया है.

भारतीय जनता पार्टी के मुख्यालय में आजकल हलचल है. लगातार बैठकें हो रही हैं. बैठकों में चर्चाएं हो रही हैं. नितिन गडकरी की टीम में कौन-कौन लोग होंगे? किन-किन लोगों को दरकिनार किया जाएगा?



# नितिन गडकरी का एजेंडा

**ताज तो मिल गया है, लेकिन उसमें कांटे बेशुमार हैं. कुछ तो वक्त की चाल ने पैदा किए हैं और कुछ घर के दुश्मनों ने. चुनौती इसी बात की है कि बीच भंवर में डगमगाती पार्टी की नैया को पार कैसे लगाया जाए.**

मनीष कुमार

आपसी फूट, अविश्वास, षड्यंत्र, अनुशासनहीनता, ऊर्जाहीनता, बिखराव और कार्यकर्ताओं में घनघोर निराशा के बीच चुनाव दर चुनाव हार का सामना, वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी की यही फ़ितरत बन गई है. ऐसे वक़्त में भारतीय जनता पार्टी को नया अध्यक्ष मिला है. 52 साल की उम्र वाले लोगों को अगर युवा कहा जा सकता है तो नया अध्यक्ष युवा है. उम्र न सही, लेकिन वह अपने बयानों, तेवर और राष्ट्रीय राजनीति के अनुभव के नज़रिए से युवा मालूम पड़ते हैं. नितिन जयराम गडकरी, राष्ट्रीय राजनीति में एक नया नाम ज़रूर है, लेकिन महाराष्ट्र का यह नेता भारतीय जनता पार्टी के कई दिग्गज नेताओं को पैवेलियन में बिठाकर ख़ुद अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठा है. भारतीय जनता पार्टी देश का प्रमुख विपक्षी दल है. देश में प्रजातंत्र मज़बूत करने के लिए भाजपा का मज़बूत होना ज़रूरी है. क्या गडकरी को इस ज़िम्मेदारी का एहसास है? क्या देश को नेतृत्व देने की दूरदर्शिता और इच्छाशक्ति उनके पास है? यह समझने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि भारतीय जनता पार्टी के नए अध्यक्ष नितिन गडकरी का एजेंडा क्या है?

भारतीय जनता पार्टी के मुख्यालय में आजकल हलचल है. नितिन गडकरी की टीम में कौन-कौन लोग होंगे? किन-किन लोगों को दरकिनार किया जाएगा? नए अध्यक्ष के रास्ते कौन कांटे बिछाएगा? कुछ कहते हैं कि गडकरी में दम है और कुछ लोगों को लगता है कि अरुण जेटली और सुषमा स्वराज के मुक़ाबले गडकरी का क़द काफ़ी छोटा है. बहरहाल, भाजपा में नई टीम के गठन की जद्दोजहद चल रही है. पंचांग के हिसाब से अभी खड़मास चल रहा है. ज्योतिषीय गणना में इस अवधि को महत्वपूर्ण कार्यों के लिए सही नहीं माना गया है. इसलिए सारे फ़ैसले 14 जनवरी यानी मकर संक्रांति के बाद लिए जाएंगे. फरवरी के पहले और दूसरे सप्ताह में यह पता चल पाएगा कि भारतीय जनता पार्टी के नए अध्यक्ष की टीम में कौन-कौन शामिल हैं.

नितिन गडकरी ने भाजपा की कमान ऐसे वक़्त में संभाली है, जब यह पार्टी कई स्तर पर, कई दिशाओं से बिखर रही है. संघ और भाजपा के रिश्तों को लेकर पार्टी दो धड़ों में बंटी है. एक तरफ़ वे लोग हैं, जिनकी पृष्ठभूमि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की है, जो संघ की विचारधारा में विश्वास रखते हैं और जिन्हें भारतीय जनता पार्टी के कामकाज में संघ के दख़ल से गुरेज़ नहीं है. दूसरे वे लोग हैं, जो संघ से जुड़े नहीं हैं, जो संघ की विचारधारा और पार्टी के कामकाज में संघ के हस्तक्षेप का विरोध करते हैं. फ़िलहाल, संघ के समर्थक भाजपा पर भारी हैं. यही वजह है कि संघ के हस्तक्षेप से गडकरी अध्यक्ष बने हैं. नितिन गडकरी भाजपा के कार्यकर्ताओं और समर्थकों की पसंद नहीं हैं, बल्कि वह संघ के नुमाइंदे हैं. इसका मतलब साफ़ है कि भारतीय जनता पार्टी में गडकरी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एजेंडे को लागू करने वाले हैं. गडकरी की टीम में उन लोगों को महत्वपूर्ण दायित्व दिए जाएंगे, जिनकी पृष्ठभूमि संघ की है. इसमें कोई शक़ नहीं है कि गडकरी दिल्ली में पहले से बैठे नेताओं के निशाने पर रहेंगे.

नितिन गडकरी की चुनौतियां भी अजीबोग़रीब हैं. उन्हें दुश्मनों से ख़तरा नहीं है. उनकी सबसे बड़ी परेशानी भाजपा के वे नेतागण हैं, जो अब तक पार्टी के कर्ताधर्ता रहे हैं. अध्यक्ष बनते ही नितिन गडकरी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों पर पहला वार किया. पुराने लोगों को वापस पार्टी में शामिल करने की बात कहकर गडकरी ने उन नेताओं को यह संदेश दिया है कि वे अपने हिसाब से पार्टी को चलाएंगे. यह संदेश देने की कोशिश की कि पार्टी को अब तक जिस हिसाब से चलाया जा रहा था, उस पर लगाम लगने वाली है. व्यक्ति विशेष के हित से पार्टी का हित पहले है. इस संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी से निकाले गए पूर्व विदेश मंत्री जसवंत सिंह का नाम नहीं लिया गया. जसवंत सिंह भाजपा के बड़े नेता रहे हैं. उनकी पृष्ठभूमि संघ की नहीं है. उनका नाम न लेकर गडकरी ने उस विश्वास को पुख्ता किया है कि वह संघ के नुमाइंदे बनकर भारतीय जनता पार्टी के भविष्य को निखारना चाहते हैं.

**नितिन गडकरी ने भाजपा की कमान ऐसे वक़्त में संभाली है, जब यह पार्टी कई स्तर पर, कई दिशाओं से बिखर रही है. बिखराव की सबसे बड़ी वजह संघ और भाजपा केरिश्तों को लेकर है. भाजपा पर किसका अधिकार हो, इस बात को लेकर भारतीय जनता पार्टी दो धड़ों में बंटी है.**

भाजपा में गडकरी की सीधी लड़ाई दिल्ली में पहले से स्थापित नेताओं से है. दिल्ली में बैठे नेताओं ने शायद इसे पहले ही भांप लिया था, इसलिए आडवाणी के नेतृत्व में गडकरी के अध्यक्ष बनने से ठीक पहले सुषमा स्वराज एवं गोपीनाथ मुंडे को लोकसभा में विपक्ष का नेता और उपनेता तथा राज्यसभा में अरुण जेटली एवं एस एस अहलुवालिया को विपक्ष का नेता और उपनेता घोषित कर दिया गया. आडवाणी एंड कंपनी ने ऐसा करके गडकरी के पर कतरने की चाल चल दी. संसदीय दल और संगठन के कामकाज को अलग कर दिया. देखना यह है कि संघ और गडकरी इसके जवाब में क्या करते हैं.

भाजपा के सूत्र बताते हैं कि संघ की मदद से पार्टी में भारी फेरबदल होने वाले हैं. हो सकता है कि कामराज प्लान की तर्ज़ पर भाजपा में भी सभी पदाधिकारियों, अलग-अलग कमेटियों के सदस्यों, संसदीय बोर्ड एवं संसदीय दल, राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इस्तीफ़े दिलाए जाएं, ताकि नए अध्यक्ष फिर से संगठन का पुनर्गठन क र सकें. इस्तीफ़े की तारीख़ 15 जनवरी रखी गई है. अगर इसका विरोध होता है तो संघ और गडकरी को यह तुरंत पता चल जाएगा कि वे कौन लोग हैं, जो आने वाले दिनों में समस्या खड़ी कर सकते हैं. संघ की मदद से उन नेताओं पर सख्त कार्रवाई की जाएगी. यही एकमात्र रास्ता है, जिससे गडकरी पूरी तरह पार्टी की कमान अपने हाथों में ले सकेंगे. अपने नज़दीकियों और संघ के चहेते लोगों को संगठन में ज़िम्मेदारियां देने में कामयाब हो सकेंगे. इसके बाद गडकरी संघ की योजनाओं को पार्टी संगठन में अंजाम देंगे. संघ की योजना यह है कि विचारधारा में विश्वास न रखने वाले नेताओं की जगह देश भर में संघ के 500 विश्वस्त कार्यकर्ताओं को अलग-अलग दायित्व दिया जाएगा, जो पार्टी के नेताओं की गतिविधियों पर नज़र रखेंगे. भाजपा संगठन को अपनी गिरफ़्त में लेने की संघ की योजना है. संघ भारतीय जनता पार्टी की चाल, चरित्र और चेहरा बदलना चाहता है, लेकिन सवाल यह है क्या गडकरी संघ के एजेंडे को लागू कर पाएंगे?

गडकरी और संघ की इस योजना का विरोध होना तय है. सोचने वाली बात यह है कि इसके अलावा गडकरी के पास पार्टी को नियंत्रण में लेने का दूसरा रास्ता भी नहीं है. गडकरी का मुक़ाबला दिल्ली में बैठे परिपक्व नेताओं से है. अगर अभी गडकरी इस मौक़े से चूक जाते हैं तो भविष्य में उन्हें कोई दूसरा मौक़ा नहीं मिलने वाला है. इसके बाद गडकरी भाजपा में नई जान फूंकने में सफल नहीं हो पाएंगे. गडकरी भी राजनाथ सिंह, जेना कृष्णमूर्ति और वैंकेया नायडू जैसे अध्यक्ष साबित होंगे.

*जो कहो, वह करो मत और जो करना है, वह कहो मत-* यह दिल्ली में राजनीति करने का मूलमंत्र है. अध्यक्ष बनने के बाद गडकरी ने प्रेस कांफ्रेंस में जो बातें कहीं, अगर वे सही हैं तो जो लोग गडकरी से आशा लगाए बैठे हैं, उन्हें बाद में निराशा होगी. अगर गडकरी ने दिल्ली के मूलमंत्र को समझ लिया है तो भाजपा में बदलाव के आसार हैं. पार्टी को मज़बूत करने की बात उठी तो गडकरी ने कहा कि वह पार्टी के जनाधार का विस्तार करेंगे. दलितों, अल्पसंख्यकों, मज़दूरों और किसानों का दिल जीतना उनकी प्राथमिकता होगी. उन्होंने यह भी कहा कि वह विकास की राजनीति करेंगे. भाजपा के कमज़ोर होने की मुख्य वजह निराश कार्यकर्ता, समर्थकों का पार्टी से टूटा हुआ विश्वास और एयरकंडीशन कमरे में बैठे बिना जनसमर्थन वाले नेता हैं. गडकरी ने अब तक यह नहीं बताया है कि कार्यकर्ताओं की निराशा को वह कैसे दूर करेंगे और समर्थकों का विश्वास कैसे जीतेंगे.

भारतीय जनता पार्टी देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी है. प्रजातंत्र में इसका महत्व और ज़िम्मेदारी सरकार चलाने वाली पार्टी से ज़्यादा है. ऐसी पार्टी का मुखिया बनना कोई आसान काम नहीं है. यह काम और भी मुश्किल तब हो जाता है, जब पार्टी के मुख्य नेता विरोध कर रहे हों. ऐसे पद पर विराजमान होने के लिए दूरदर्शिता की आवश्यकता होती है. ऐसा दर्शन, जिससे आम जनता का विश्वास मज़बूत होता हो. भारतीय जनता पार्टी यही ज़िम्मेदारी पिछली बार नहीं निभा सकी, जिसकी वजह से जनता ने उसे सरकार बनाने का मौक़ा नहीं दिया. यशवंत सिन्हा ने 2009 के चुनाव में हार के बाद तत्कालीन अध्यक्ष राजनाथ सिंह से पूछा था कि जो लोग हार के लिए ज़िम्मेदार हैं, उन्हें इनाम क्यों दिया जा रहा है? ऐसे ही सवाल अरुण शौरी ने उठाए थे. अब ये सारे सवाल नितिन गडकरी के सामने हैं.

नितिन गडकरी को महाराष्ट्र के बाहर लोग जानते नहीं हैं, इसलिए कार्यकर्ताओं और आम जनता के बीच नए अध्यक्ष के बारे में कोई राय नहीं है. ऐसे व्यक्तित्व को इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी मिल जाने के फ़ायदे भी हैं और नुक़सान भी. नुक़सान यह है कि ऐसे नेताओं को ख़ुद को मज़बूत करने में ही काफ़ी वक़्त लग जाता है. अपनी छवि और ख़ुद को राष्ट्रीय स्तर का नेता बनाने और साबित करने में ही उसकी सारी ऊर्जा निकल जाती है. ऐसे में सकारात्मक बदलाव नहीं हो पाता है. पार्टी की हालत पहले से ज़्यादा ख़राब हो जाती है. ऐसे नेताओं के अध्यक्ष बनने से फ़ायदा सिर्फ़ इतना है कि नया चेहरा होने से पार्टी में नई ऊर्जा का संचार हो सकता है. उसका व्यक्तित्व लोगों के सामने नहीं होता है, तो ऐसे में अध्यक्ष बनने के बाद वह क्या करता है, उसी के अनुसार उसे मापा जाता है. उसकी छोटी सी सफलता भी दूसरे लोगों की बड़ी सफलताओं पर भारी पड़ती है. यह बात और है कि गडकरी के पास अपनी योग्यता साबित करने के लिए वक़्त कम है. अगले तीन महीने गडकरी की अग्नि परीक्षा का समय है. पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों का धैर्य ख़त्म होता जा रहा है. अगर गडकरी पार्टी में नई जान फूंकने में असफल रहे तो उन पर भी सवाल उठने शुरू हो जाएंगे.

manish@chauthiduniya.com



फोटो- *प्रभात पाण्डेय*

सबसे पहले 1943 में स्व. डंबर सिंह गुरुंग ने गोरखा लीग का गठन किया और भारत के गोरखाओं के लिए अलग राज्य मांगा. 80 के दशक में सुभाष घीसिंग ने गोरखालैंड का बिगुल फूंका.

# गोरखालैंड की कठिन डगर





विमल राय

[illegible]

तेलंगाना की आग उत्तर बंगाल के बर्फ़ीले पहाड़ों के साथ-साथ मैदानी इलाक़ों तक पहुंच गई है. वैसे गोरखालैंड की तरह कामतापुर आंदोलन कभी तीव्र नहीं रहा, पर मौक़ा देखकर एक बार फिर इसके कॉडर सड़कों पर उतर आए हैं. कामतापुर पीपुल्स पार्टी, कामतापुर प्रोग्रेसिव पार्टी और कामतापुर लिबरेशन आर्गेनाइज़ेशन नामक तीन संगठन इस आंदोलन को चला रहे हैं.

कामतापुर पीपुल्स पार्टी ने नवें दशक से अलग राज्य और कामतापुरी भाषा की संवैधानिक स्वीकृति के लिए आंदोलन छेड़ा था, पर जल्द ही इसके कॉडरों को लगने लगा कि लोकतांत्रिक तरीक़े से आंदोलन करने से कुछ हासिल नहीं होने वाला. वर्ष 1993 में जलपाईगुड़ी के कुमारग्राम प्रखंड के दक्षिण पुखुरी गांव में छात्रनेता तधीर दास उर्फ़ जीवन सिंह, आत्मसमर्पण कर चुके कॉडर मधुसूदन दास उर्फ़ टार्जन, असम से आए उल्फा नेता भास्कर कालिता एवं अजय घोषाहारी के बीच एक बैठक हुई, जिसमें कामतापुरी रिवोल्युशनरी स्टूडेंट्स यूनियन का गठन हुआ. भास्कर कालिता ने उस दिन जीवन सिंह को 10 हज़ार रुपये दिए और कॉडरों की बहाली का काम शुरू करने को कहा. इसके बाद 1994 में 28 दिसंबर को कुमारग्राम के दुर्गादास के घर में हुई एक बैठक में केएलओ का गठन हुआ. जीवन सिंह को नेता बनाया गया और 21 कॉडरों को मिलाकर केएलओ कमेटी बनाई गई. सबसे पहले 2001 में केपीपी ने उत्तर बंगाल के तीन ज़िलों और असम के एक पश्चिमी ज़िले को मिलाकर अलग कामतापुरी राज्य की मांग की. इसके कुछ ही दिनों बाद उल्फा की मदद से केएलओ के 10 सदस्य प्रशिक्षण लेने असम के कोकराझार गए, पर सेना ने इनकी कोशिशें नाकाम कर दीं. 1995 में उल्फा के भूटान स्थित एक प्रशिक्षण शिविर में केएलओ कॉडरों का प्रशिक्षण शुरू हुआ. वर्ष 2003 में भूटान में सेना की कार्रवाई में उल्फा के साथ-साथ केएलओ के शिविर भी ध्वस्त कर दिए गए. इस ऑपरेशन ऑल क्लीयर के बाद भूटानी सेना के समक्ष क़रीब 200 कॉडरों ने आत्मसमर्पण किया. केएलओ सुप्रीमो जीवन सिंह ने भागकर बांग्लादेश में शरण ली. जीवन सिंह आज तक फ़रार हैं. पुलिस केएलओ की अगली पंक्ति के कई नेताओं को जेल भेज चुकी है, पर जीवन सिंह तक उसके हाथ नहीं पहुंच पाए हैं. जीवन सिंह की पत्नी भारती दास फ़िलहाल पुलिस की गिरफ़्त में हैं. पिछले सितंबर में असम के गोसाईं गांव में सेना और पुलिस के संयुक्त अभियान में जीवन सिंह की बहन सुमिता और रिश्तेदार धनंजय बर्मन पकड़े गए. धनंजय और सुमिता से पूछताछ में पुलिस को पता चला कि केएलओ का आठवां प्रशिक्षण शिविर बांग्लादेश में शुरू होने वाला है. इसके लिए उत्तर बंगाल के मैनागुड़ी, धूपगुड़ी और कुमारग्राम प्रखंड से कॉडरों की बहाली चल रही है. 1999 से 2004 तक केएलओ कॉडरों ने दर्ज़नों माकपा नेताओं का ख़ून किया. 2004 से एक सौ से ज़्यादा केएलओ कॉडरों ने हथियार डाले हैं और अभी उत्तर बंगाल की जेलों में 80 से ज़्यादा कॉडर विचाराधीन क़ैदियों के रूप में बंद हैं. भूटानी सेना के अभियान के बाद पुलिस एवं सेना ने बताया कि कामतापुरी आंदोलनकारियों की रीढ़ तोड़ दी गई है, पर केएलओ के आठवें प्रशिक्षण शिविर की तैयारी की ख़बर ने प्रशासन की परेशानी बढ़ा दी है.

तेलंगाना विवाद के बाद इसके कॉडरों में एक नया उत्साह पैदा हुआ है. केपीपी के मुखिया अतुल राय ने चौथी दुनिया को बताया कि 20 दिसंबर से उसके कॉडर राजमार्ग पर अवरोध कर रहे हैं. उन्होंने बताया कि कामतापुरी आंदोलन को झामुमो नेता शिबू सोरेन और नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के नेता पी ए संगमा का भी समर्थन है. ख़बर है कि केएलओ ने प्रशिक्षण के लिए राजवंशी युवकों की बहाली शुरू कर दी है. इसके अलावा ग्रेटर कूच बिहार डेमोक्रेटिक पार्टी भी अलग कूच बिहार राज्य के लिए आंदोलन करती रही है. सितंबर 2005 में आंदोलनकारियों के हमले में एक एसपी एवं दो पुलिसकर्मियों सहित पांच लोगों की मौत हो गई थी.

feedback@chauthiduniya.com



*कामतापुरी राज्य की मांग आख़िर क्यों की जा रही है?*

देखिए, हम बंगाली नहीं हैं. हमारी भाषा, संस्कृति, इतिहास सब कुछ अलग है. कामतापुर का इलाक़ा कभी बंगाल का हिस्सा नहीं रहा. इतिहास देखें तो पता चलेगा कि कामतापुरी स्टेट और कूच बिहार स्टेट दोनों अलग-अलग थे. आज़ादी के बाद बंगाल के पहले मुख्यमंत्री विधान चंद्र राय ने कामतापुरी स्टेट को कूच बिहार स्टेट में जोड़ दिया और इस तरह हमारी पहचान धुंधली पड़ गई. हमारे बच्चों को अपनी मातृभाषा में पढ़ाई की सुविधा नहीं है. रेडियो-टीवी पर हमारी भाषा में कार्यक्रम नहीं प्रसारित किए जाते. हमें पूरी तरह से मुख्य धारा से अलग-थलग रखा गया है.

*अलग राज्य और कामतापुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर आपकी पार्टी के कॉडरों ने 20 दिसंबर को राजमार्गों पर अवरोध उत्पन्न किया. क्या इस तरह के नकारात्मक आंदोलन से आप अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे?*

हमने सिर्फ़ पथावरोध किया. हमारे कॉडर किसी तरह की तोड़फोड़ या हिंसा में कभी भी शामिल नहीं रहे. हमारे इस आंदोलन का ही असर है कि बंगाल के गृह सचिव ने हमें बातचीत के लिए 29 दिसंबर को कोलकाता बुलाया.

*कामतापुरी में बंगाल के कौन-कौन से ज़िले शामिल करने की मांग है?*

प्रस्तावित राज्य में बंगाल के दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, उत्तर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर, मालदा और असम के 17 ज़िले शामिल हैं.

*दार्जिलिंग को तो विमल गुरुंग ने प्रस्तावित गोरखालैंड में शामिल किया है?*

हां, यह सही है, पर उस ज़िले के बहुत सारे प्रखंडों में ग़ैर-गोरखा लोगों की आबादी है. उनकी संस्कृति गोरखाओं और बंगालियों दोनों से अलग है.

*आपकी पार्टी ने तो गोरखा जन मुक्ति मोर्चा के साथ मिलकर काम करने का ऐलान किया था. फिर अलग क्यों हो गए?*

विमल गुरुंग से दोस्ती आज भी है. मत भूलिए कि हमारा लक्ष्य अलग-अलग है. बंगाल के शासकों से हम दोनों शोषित होते आ रहे हैं. अगर लोग बंगाल के साथ नहीं रहना चाहते तो उन्हें अलग राज्य देने में क्या हर्ज है?

*ख़बर है कि आपने कामतापुर पीपुल्स पार्टी के मुखिया निखिल राय के साथ मिलकर आंदोलन को मज़बूत करने का फ़ैसला किया है?*

नहीं, पिछले पांच सालों से पीपुल्स पार्टी से हमारा कोई संबंध नहीं है. जनता हमारे साथ है और जनता के भरोसे के बूते ही हम अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं.

छह महीनों के दौरान राज्य में लगभग एक हज़ार महिला पंचायत प्रतिनिधियों के साथ मारपीट, प्रताड़ना और अपमान के मामले सामने आए, लेकिन इससे कहीं अधिक संख्या में वे महिला जनप्रतिनिधि हैं, जो अपना अपमान उजागर नहीं होने देतीं.



# मध्य प्रदेश और भ्रष्टाचार के नज़ारे



संध्या पांडे

[illegible]

feedback@chauthiduniya.com



# महिला सरपंचों पर अत्याचार

[illegible]

feedback@chauthiduniya.com

बांग्लादेश के पर्यावरणविदों का कहना है कि अगर मणिपुर में बराक और तुईवाई नदी के संगम स्थल पर 162 मीटर ऊंचे बांध का निर्माण किया जाएगा तो बराक नदी के प्रवाह का रुख़ बांग्लादेश की ओर हो सकता है.



# विवाद के केंद्र में तिपाईमुख बांध




प्रस्तावित बांध निर्माण स्थल




बांध का आम जनता भी विरोध कर रही है



दिनकर कुमार



बेगम खालिदा जिया: बांध के विरोध में



जयराम रमेश: निर्माण रुक सकता है




feedback@chauthiduniya.com

डीयू कुलपति दीपक पेंटल के पास नियुक्ति का कोई लिखित अनुबंध नहीं है, जबकि डीयू एक्ट 1922 की धारा 45 के तहत विश्वविद्यालय प्रशासन और उसके अधिकारी के बीच एक लिखित क़रार का होना ज़रूरी है



## डीयू कुलपति नियुक्ति विवाद

# पेंटल के पास कोई लिखित अनुबंध नहीं

शशि शेखर

चौथी दुनिया के 21–27 दिसंबर 2009 के अंक में दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के कुलपति दीपक पेंटल की नियुक्ति से जुड़े विवाद पर एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, जिसमें यह ख़ुलासा किया गया था कि कैसे 2005 में दीपक पेंटल की नियुक्ति में तमाम नियम–क़ानूनों को ताक़ पर रख दिया गया था. रिपोर्ट प्रकाशित होने के बाद भी चौथी दुनिया ने पेंटल की नियुक्ति से संबंधित दस्तावेज़ों की पड़ताल जारी रखी. उसी जांच–पड़ताल के दौरान चौथी दुनिया को इस नियुक्ति प्रकरण से संबंधित कुछ और ऐसे अहम दस्तावेज़ हासिल हुए हैं, जिनके आधार पर यह साबित होता है कि दीपक पेंटल अभी भी दिल्ली विश्वविद्यालय एक्ट 1922 के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए कुलपति पद पर क़ाबिज़ हैं.

दरअसल, डीयू एक्ट 1922 की धारा 45 के तहत किसी भी वेतनभोगी अधिकारी और डीयू के बीच एक लिखित अनुबंध होता है. एक्ट के प्रावधानों के तहत इस क़रार की एक–एक कॉपी उस अधिकारी और डीयू प्रशासन के पास होती है. ग़ौरतलब है कि डीयू एक्ट की धारा आठ के तहत कुलपति, अधिकारी की श्रेणी में आता है और क़ानून 11 (एफ)(3) के मुताबिक़ कुलपति पूर्णकालिक वेतनभोगी अधिकारी होता है. लेकिन जब सूचना अधिकार क़ानून के तहत डीयू प्रशासन से दीपक पेंटल और उसके बीच हुए लिखित अनुबंध की कॉपी के बारे में पूछा गया तो जवाब मिला कि इस तरह का कोई अनुबंध उपलब्ध नहीं है. ज़ाहिर है, जब अनुबंध होगा ही नहीं तो उसकी कॉपी कहां से उपलब्ध होगी. डीयू एक्ट के जानकार मानते हैं कि लिखित अनुबंध के बिना पद पर बने रहना ग़ैरक़ानूनी है, लेकिन जब कोई सवाल उठाने वाला ही न हो तो ऐसी गतिविधियां भला कैसे रुक पाएंगी? डीयू टीचर्स एसोसिएशन (डूटा) के अध्यक्ष आदित्य नारायण मिश्रा से जब इस मामले पर चौथी दुनिया ने बात करनी चाही तो उनका कहना था कि यह सब टेक्निकल मसला है. इससे भी कई अहम मसले हमारे पास हैं, जिन पर बात की जा सकती है. ज़ाहिर है, मसले तो कई हैं, लेकिन किस मसले को तूल देना है और किसे नहीं, यह रणनीति भी बख़ूबी समझी जा सकती है. शायद तभी 2005 में जब नियुक्ति की जा रही थी तो किसी को भनक तक नहीं लगी कि कैसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने नियमों की अनदेखी करते हुए दीपक पेंटल को डीयू का कुलपति बनवा दिया. चौथी दुनिया के पास पेंटल की नियुक्ति से जुड़ी वह फ़ाइल है, जिससे साबित होता है कि यह नियुक्ति विजिटर के हस्ताक्षर के बग़ैर हुई है. डीयू के विजिटर राष्ट्रपति होते हैं, जो कुलपति की नियुक्ति करते हैं. लेकिन पेंटल की नियुक्ति से संबंधित पूरी फाइल की जांच में ऐसा कोई पत्र नहीं मिला, जिससे पता चल सके कि पेंटल को कुलपति नियुक्त करने के लिए विजिटर के हस्ताक्षर से कोई आदेश या पत्र जारी किया गया हो.

shashishekhar@chauthiduniya.com

दीपक पेंटल --डीयू के कुलपति

कुलपति कार्यालय

**UNIVERSITY OF DELHI ACT-1922**
OFFICERS OF THE UNIVERSITY
Sec. 8. The following shall be the Officers of the University:
(i) The Chancellor (ii)The. Pro-Chancellor, (iii) The Vice-Chancellor, (iv) The Pro-Vice-Chancellor, if any, (v) the Treasurer, (vi) the Registrar, (vii) the Deans of the Faculties.
Statutes 11-F. (3) The Vice-Chancellor shall be a whole-time salaried officer of the University.
Sec. 45. (1) Every salaried officer and teacher of the University shall be appointed under a written contract, which shall be lodged with the University and a copy thereof furnished to the officer or teacher concerned.

कुलपति से संबंधित डीयू एक्ट 1922 के प्रावधान

> मैंने डीयू प्रशासन से सूचना अधिकार क़ानून के तहत पूछा कि क्या डीयू एक्ट 1922 की धारा 45 के मुताबिक़ पेंटल के पास कोई लिखित अनुबंध है? इस पर मुझे बताया गया कि इस तरह का कोई अनुबंध उपलब्ध नहीं है. ज़ाहिर है, पेंटल ग़ैरक़ानूनी ढंग से अपने पद पर बने हुए हैं.

**डॉ. एच.पी सांगवान,**
डीयू एक्ट के जानकार और आरटीआई कार्यकर्ता

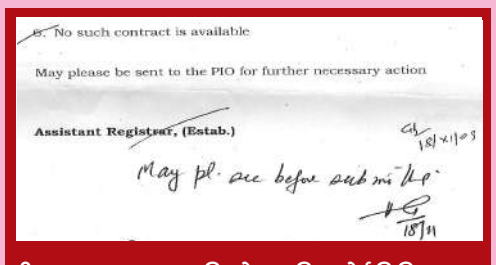

No such contract is available
May please be sent to the PIO for further necessary action
Assistant Registrar, (Estab.)
May pl. see before submitting

डीयू प्रशासन का जवाब जिसके मुताबिक कोई लिखित करार उपलब्ध नहीं है

> डीयू टीचर्स एसोसिएशन (डूटा) के अध्यक्ष आदित्य नारायण मिश्रा से जब इस मामले पर चौथी दुनिया ने बात करनी चाही तो उनका कहना था कि यह सब टेक्निकल मसला है. इससे भी कई अहम मसले हमारे पास हैं, जिन पर बात की जा सकती है.

# आदिवासियों के संघर्ष ने इतिहास रचा

> सोनभद्र में तीन लाख 78 हज़ार 442 आदिवासी हैं. वनाधिकार क़ानून के तहत कुल 51862 लोगों ने दावे ग्राम समितियों के पास प्रस्तुत किए थे. इनमें 32,371 दुद्धी तहसील, 15,912 राबर्ट्सगंज तहसील और 3,579 घोरावल तहसील से प्राप्त हुए थे.

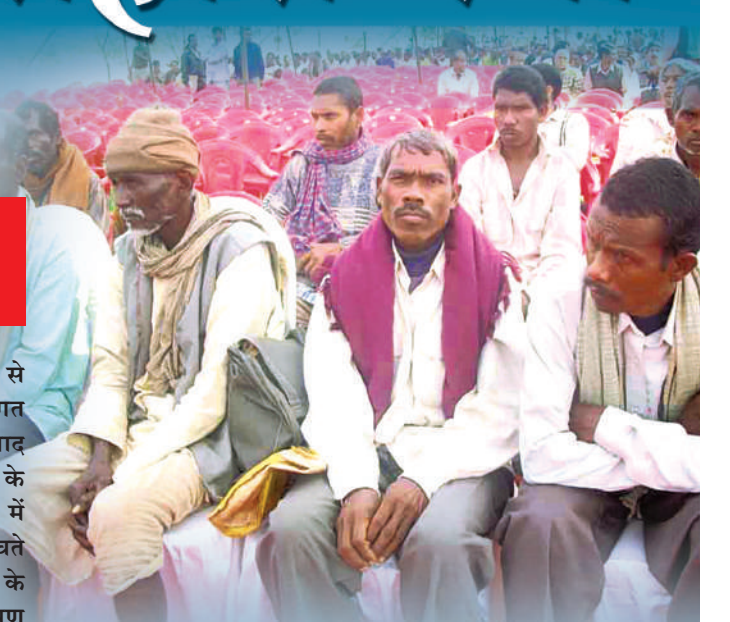

शिव दास

बीस दिसंबर की सुबह. उत्तर प्रदेश के आदिवासी बहुल जनपद सोनभद्र का पुलिस लाइन परिसर. विंध्य की पहाड़ियों में आबाद नगर पंचायत चुर्क (गुर्मा) स्थित इस परिसर में सूर्य निकलने के साथ ही शुरू होती है आदिवासियों एवं नौकरशाहों की चहलक़दमी. यह सब कुछ समझने में आसपास के लोगों को ज़्यादा सिर खपाना नहीं पड़ता. उन्हें मालूम है कि आज का दिन देश के आदिवासी संघर्ष के इतिहास में अपनी जगह सुनिश्चित करेगा. आदिवासियों की भीड़ में कोई अपने ठिठुरते बदन को मटमैली धोती और स्वेटर में छुपाए हुए है तो कोई फटी चादर में. कोई आदिवासी महिला ठंड हवाओं से बचने के लिए मटमैली चादर अथवा शाल को सुरक्षा कवच बनाए हुए है तो कोई ख़ुद को सूती साड़ी में छुपाती नज़र आ रही है. किसी के पैर में प्लास्टिक की टूटी चप्पलें हैं तो कोई सड़क पर स्वागत कर रहे कंकड़ों को नंगे पांव रौंदता हुआ आगे बढ़ रहा है. दूसरी ओर सूट–बूट में लग्ज़री गाड़ियों से निकलने वाले नौकरशाहों की जमात है, जो अपने हुक्मरानों की आवभगत में जुटे हुए हैं. कुर्सियों पर विराजमान होकर प्राय: गप्प मारने वाले लिपिकों की फ़ौज फ़ाइलों के अंदर रखे काग़ज़ों को दुरुस्त करने में जुटी हुई.

आज़ादी के 62 वर्षों बाद भी अपने पुश्तैनी अधिकार (जंगल की ज़मीन का हक़) के लिए लड़ रहे आदिवासियों और नौकरशाहों की उक्त तस्वीर बता रही है कि देश के दो अंकों वाली विकास दर में हम कहां हैं? ख़ैर, आदिवासी संघर्ष के ऐतिहासिक पल की घड़ी जैसे–जैसे नज़दीक आ रही है, वैसे–वैसे परिसर में लाखों रुपये ख़र्च करके बने पंडाल में बिछी कुर्सियां भरती जा रही हैं. साथ ही पास में बिछी दरी का रकबा भी कम होता जा रहा है. सुबह के साढ़े दस बज चुके हैं. अचानक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती है. पंडाल में बैठे लोगों की निगाहें आवाज़ की ओर जाती हैं. पता चलता है कि यह आवाज़ लखनऊ से आए सरकारी नुमाइंदों के हेलीकॉप्टर की है. हेलीकॉप्टर पंडाल के पास ज़मीन पर उतरता है. पंडाल में बैठे लोग इधर–उधर भागने लगते हैं. चंद मिनटों बाद लोग पुन: अपने स्थान को ग्रहण कर लेते हैं. उनकी बेसब्री बढ़ जाती है. दोपहर 12 बजे समाज कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव प्रेम नारायण, प्रमुख सचिव (वन) चंचल कुमार तिवारी, प्रमुख सचिव (राजस्व) आर पी सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव अनिल संत एवं समाज कल्याण निदेशक रामबहादुर आदि आला अधिकारी मंचासीन होते हैं. मौक़ा है भारत सरकार के अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारी की मान्यता) अधिनियम 2006 एवं नियम 2007 के तहत आदिवासियों को जंगल की ज़मीन पर अधिकार के प्रमाणपत्र वितरित करने के लिए आयोजित हुए कार्यक्रम का. दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ होता है. लाउडस्पीकर से अपने–अपने नामों की घोषणा सुनने के लिए आदिवासियों में बेचैनी बढ़ती जा रही है. अचानक दुद्धी तहसील के कुलडोमरी गांव निवासी 60 वर्षीय आदिवासी राम जी का नाम हवा में गूंजता है. तालियों की गड़गड़ाहट से लोग राम जी का स्वागत करते हैं. लंबे संघर्ष के बाद मिले अधिकार की ख़ुशी के आंसुओं को अपनी आंखों में छुपाए राम जी मंच पर पहुंचते हैं. समाज कल्याण विभाग के प्रमुख सचिव प्रेम नारायण राम जी को प्रमाणपत्र प्रदान करते हैं और पूरा पंडाल एक बार फिर तालियों से गूंज उठता है. राम जी प्रमाणपत्र पाकर धन्य हो जाते हैं, क्योंकि यह उनके संघर्ष की जीत का परिणाम है. एक–एक करके 3100 आदिवासियों को जंगल की ज़मीन पर जोत–कोड़ करने और फ़सल उगाने का अधिकार प्रमाणपत्र दिया गया.

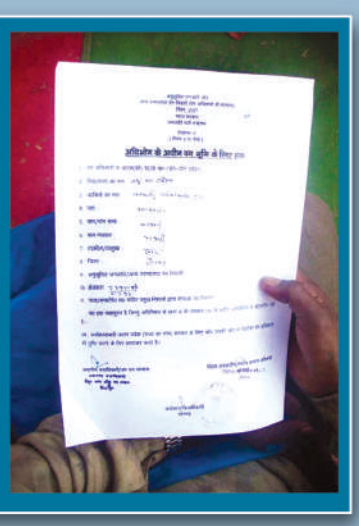

> सोनभद्र की तीन तहसीलों घोरावल, राबर्ट्सगंज और दुद्धी के जंगलों की कुल 325850 एकड़ भूमि पर 3100 आदिवासियों को वनाधिकार क़ानून 2006 के तहत अधिकार दिया गया.

सोनभद्र की तीन तहसीलों घोरावल, राबर्ट्सगंज और दुद्धी के जंगलों की कुल 325850 एकड़ भूमि पर 3100 आदिवासियों को वनाधिकार क़ानून 2006 के तहत अधिकार दिया गया. सोनभद्र में 275 ग्राम वनग्राम हैं. इन गांवों में वनाधिकार क़ानून के तहत ग्राम समितियों का गठन किया गया है. सोनभद्र में तीन लाख 78 हज़ार 442 आदिवासी हैं. वनाधिकार क़ानून के तहत कुल 51862 लोगों ने दावे ग्राम समितियों के पास प्रस्तुत किए थे. इनमें 32,371 दुद्धी तहसील, 15,912 राबर्ट्सगंज तहसील और 3,579 घोरावल तहसील से प्राप्त हुए थे. क़रीब 27,000 दावों का स्थलीय सत्यापन ज़िला स्तर पर किया गया, जिनमें 3100 आदिवासियों को वनाधिकार क़ानून के तहत अधिकार योग्य पाया गया. शेष दावों का सत्यापन हो रहा है. अधिकार प्रमाणपत्र पाने वाले सभी अनुसूचित जनजाति के हैं.

राष्ट्रीय वन जन श्रमजीवी मंच की रोमा का कहना है कि यह जनवादी प्रक्रिया की जीत है. वनाधिकार क़ानून के तहत जल्द से जल्द आदिवासियों समेत अन्य परंपरागत वन निवासियों को भूमि अधिकार प्रमाणपत्र दिया जाए, अन्यथा स्थिति और भयावह होगी. रोमा उत्तर प्रदेश में वनाधिकार क़ानून की समन्वयक भी हैं. जन संघर्ष मोर्चा के संयोजक अखिलेंद्र प्रताप सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार के इस क़दम को ऊंट के मुंह में जीरा करार दिया. उन्होंने जंगल की ज़मीन पर क़ाबिज़ सभी आदिवासियों समेत अन्य परंपरागत वन निवासियों को यथाशीघ्र भूमि अधिकार प्रमाणपत्र देने की मांग की. आदिवासी गिरिवासी समिति के अध्यक्ष एवं 27 वर्षों तक दुद्धी विधानसभा से विधायक रह चुके विजय सिंह गौड़ ने उत्तर प्रदेश सरकार की इस कार्रवाई को खानापूर्ति मात्र बताया. उन्होंने कहा कि आदिवासियों को उनकी पूरी ज़मीन मिलनी चाहिए, जिस पर वे क़ाबिज़ हैं. ज़िला प्रशासन ने बिना स्थलीय सत्यापन के ही लोगों को पांच बीघा की जगह पांच बिस्वा ज़मीन पर अधिकार का काग़ज़ पकड़ा दिया गया है. इससे आदिवासियों में संघर्ष बढ़ेगा.

feedback@chauthiduniya.com

एम जे अकबर




feedback@chauthiduniya.com

# जब तोप मुक़ाबिल हो



संतोष भारतीय

editor.chauthiduniya.com

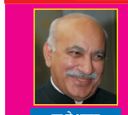

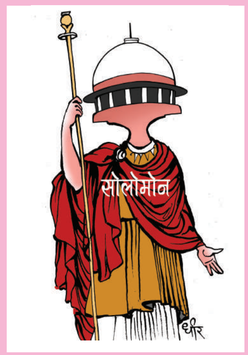



रवि किशोर

feedback@chauthiduniya.com

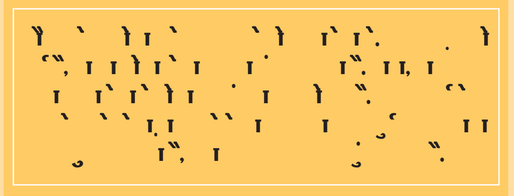

डॉ. मोहम्मद मंज़ूर आलम

feedback@chauthiduniya.com



## चौथी दुनिया की अलख

## अख़बार समाज का आईना

## प्रशंसनीय कार्टून

## कुंभ पर ज्ञानवर्द्धक जानकारी

## शाबाश सिरसिया

## वाकई नाइंसाफ़ी है

## सरकार की लचर नीति

## मुस्लिम आरक्षण का सवाल

feedback@chauthiduniya.com

सुपर अर्थ के तीन चौथाई हिस्से में पानी और बर्फ़ है. एक चौथाई हिस्से पर चट्टानें हैं, लेकिन जीजे 1214 बी का तापमान बहुत ज़्यादा है.





## ख़ुफ़िया एजेंसियों के सीक्रेट

[illegible]

### सोवियत संघ का ख़ुफ़िया आतंक



बा [illegible]

feedback@chauthiduniya.com

## ज़रा हट के

[illegible]

ब्रि [illegible]



ख [illegible]



मेष [illegible]

वृष [illegible]

मिथुन [illegible]

कर्क [illegible]

सिंह [illegible]

कन्या [illegible]

तुला [illegible]

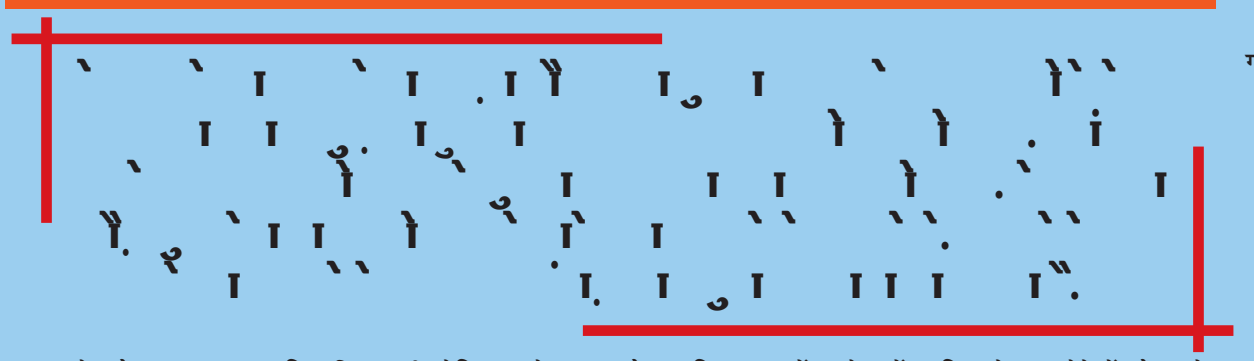

वृश्चिक [illegible]

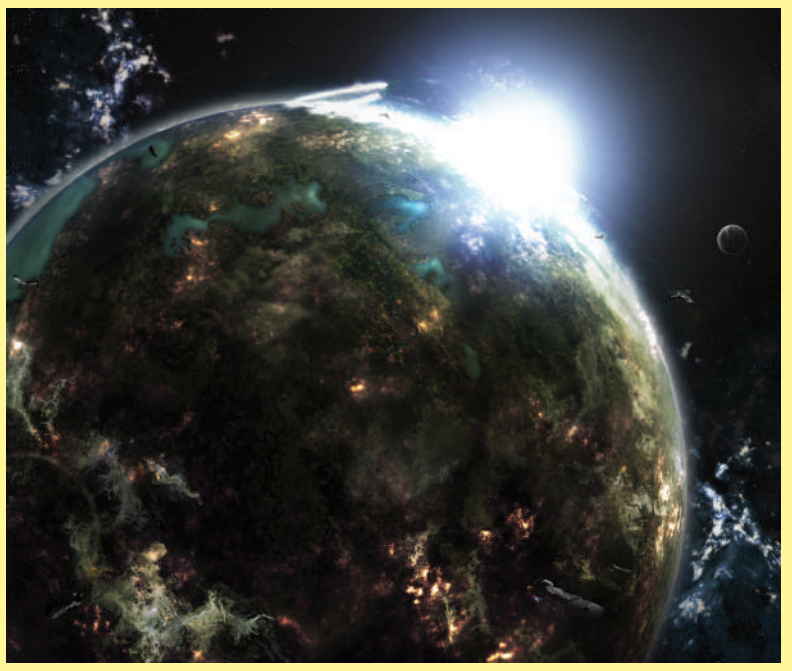

धनु [illegible]

मकर [illegible]

कुंभ [illegible]

मीन [illegible]

feedback@chauthiduniya.com

वे हिंदुओं से तो इससे भी अधिक नफ़रत करते हैं. उनकी रणनीति के मुताबिक़ पाकिस्तान की अपेक्षा भारत को ज़्यादा नुक़सान पहुंचा कर जन्नत के लिए अधिक से अधिक इंतज़ाम किया जा सकता है.

# आतंकवाद के ख़िलाफ़ भारत-पाकिस्तान का एकजुट होना ज़रूरी





feedback@chauthiduniya.com

spice

www.spice-mobile.com

अब सब खल्लास!

मल्टी-सिम M-4580 की आकर्षक कीमत और भरपूर खूबियाँ करे सबको खल्लास।




M-4580
किलर खूबी: बड़ी बैट्री
25 दिनों का स्टैंड-बाइ टाइम और 10 घंटों का टॉकटाइम
मल्टी-सिम (GSM/GSM)
MP3 प्लेयर और FM रिकार्ड
वन-टच टॉर्च और करेन्सी चेकर
4 GB तक एक्सपैन्डेबल मैमोरी
BEST BUY PRICE: Rs. 2149




M-5252
10 दिनों का स्टैंड-बाइ टाइम और 4 घंटों का टॉकटाइम
मल्टी-सिम (GSM/GSM)
डिजिटल कैमेरा
बिल्ट-इन FM एंटेना
ड्यूअल LED टॉर्च
8 GB तक एक्सपैन्डेबल मैमोरी
BEST BUY PRICE: Rs. 3049




C-5300
सभी CDMA कनेक्शन के साथ चले
बड़ी स्क्रीन
डिजिटल कैमेरा
MP3 प्लेयर और FM रिकार्ड
एक्सपैन्डेबल मैमोरी
वन-टच टॉर्च
BEST BUY PRICE: Rs. 2999

big series

बड़ी स्क्रीन | बड़ी मैमोरी | बड़ा साउण्ड | बड़ी बैट्री

Spice Mobiles come loaded with:

emergic email2sms Mail on Mobile | Shuffle Ring tone | mGurujee | ibibo i build • i bond | REUTERS | Mobile Tracker

**Registered Office:** Spice Mobiles Ltd., D-1, Sector-3, Noida 201301, Uttar Pradesh, India. **Fax:** +91-120-4363845. **E-mail:** contactus@spicemobile.in. Spice Mobile Phones are available at all leading telecom outlets. ***Conditions apply.** Price features and specifications are subject to change without prior notice. Some of the listed capacity is used for phone functions and thus available capacity could be less than the quoted figure. Battery operation time may vary depending on network usage, environment, music and video formats.

www.itsaugust.com

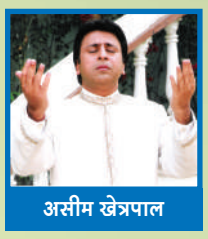

चांदी के इन नौ सिक्कों को दो बार में देने के पीछे भी बाबा की रहस्यमयी लीला का कोई न कोई संदेश अवश्य छिपा होगा? फिर सवाल यह भी उठता है कि बाबा ने लक्ष्मीबाई को नौ सिक्के ही क्यों दिए?



# बाबा की महिमा अपार





असीम खेत्रपाल

साईं बाबा का शिरडी में अवतरण एक चमत्कार कहा जाता है. शिरडी को अपना गुरुस्थान मानने वाले साईं बाबा ने कई दशकों तक एक पत्थर के आसन, जिसे वह अपना सिंहासन कहा करते थे, पर बैठकर ग़रीबों, मज़लूमों और परेशान लोगों का उद्धार किया. वर्तमान में विद्धानों और शोधकर्ताओं के लिए साईं बाबा किसी अज्ञात सत्ता से कम नहीं हैं, क्योंकि उनकी लीला के रहस्य महासमाधि के इतने वर्षों बाद आज भी रहस्य बने हुए हैं. इन रहस्यों को वे न तो सुलझा पाए हैं और न ही पूरी तरह से उनके सही कारको ं का पता लगा पाए हैं. हम यहां पर कुछ ऐसी घटनाओं का ज़िक्र करेंगे, जिनके पीछे साईं बाबा का चमत्कार तो था ही लेकिन साथ ही कुछ रहस्य भी थे. साईं बाबा की हर लीला उनके अवतरण की तरह ही निराली और रहस्यमय थी. 1918 में विजयदशमी के दिन महासमाधि से कुछ मिनट पहले साईं बाबा ने अपनी परम भक्त लक्ष्मीबाई को चांदी के नौ सिक्के दो बार में दिए थे, पहली बार में पांच सिक्के दिए थे और दूसरी बार में चार. चांदी के इन नौ सिक्कों को दो बार में देने के पीछे भी बाबा की रहस्यमयी लीला का कोई न कोई संदेश अवश्य छिपा होगा? इसके अलावा एक सवाल यह भी उठता है कि साईं बाबा ने लक्ष्मीबाई को नौ सिक्के ही क्यों दिए? साईं बाबा ने शिरडी के समस्त व्यापारियों को विनम्रता और भाईचारे का पाठ पढ़ाने के लिए पानी से दीये जलाए. हैजे जैसी घातक महामारी से शिरडी की रक्षा के लिए गेहूं पीसा. लुहार की अबोध बच्ची की रक्षा के लिए जलती हुई धूनी में हाथ डाला. तात्या कोते पाटिल की असाध्य बीमारी अपने ऊपर लेकर अपने चोले से मुक्ति पाई. उक्त सारी घटनाएं चमत्कारों से भरी हुई हैं.

साईं बाबा की महासमाधि के लगभग 91 वर्षों बाद आज भी देश-विदेश में असंख्य साईं भक्त मौजूद हैं, जिन्होंने न केवल साईं का साक्षात किया, अपितु आवश्यकता पड़ने पर कृपा भी प्राप्त की. शिरडी साईं बाबा फाउंडेशन पिछले कई वर्षों से साईं बाबा के ऐसे भक्तों पर शोध करके उन्हें सूचीबद्ध करने का प्रयास कर रहा है. मैं चौथी दुनिया के माध्यम से उन सभी को अपने अनुभव बांटने का निमंत्रण देता हूं, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से साईं को अनुभव किया हो.

spritualtravel.com, 9811037863, 9312266495

शिरडी यात्रा और वहां ठहरने की विशेष सुविधा उपलब्ध कराते हैं।

श्री साईं सच्चरित्र के 33वें अध्याय में नासिक ज़िले में रहने वाले परम भक्त श्री नारायण मोतीराम जानी की कथा है. एक रात नारायण अपने एक मित्र के साथ कहीं जा रहे थे. अचानक ही मित्र को अपने पैर में तीव्र पीड़ा का आभास हुआ. झुककर देखा तो एक बिच्छू ने उनके पैर में डंक मार दिया था. नारायण के देखते ही देखते मित्र का शरीर बिच्छू के विष से नीला पड़ने लगा. नारायण बहुत परेशान थे, उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि मित्र की प्राण रक्षा के लिए क्या किया जाए? तभी उन्हें साईं बाबा की उदी की याद आई और वह अपने मित्र को कंधे पर लादकर घर ले आए. परंतु वह स्वयं शिरडी से जो उदी लेकर आए थे, वह बहुत खोजने पर भी घर में नहीं मिली. मित्र की पीड़ा बढ़ती जा रही थी. तभी नारायण अपने घर के मंदिर में पहुंचे और साईं बाबा के सामने जल रही धूप की राख हाथ में लेकर उन्होंने कहा कि हे शिरडी पुरीश्वर साईं बाबा आप अंतर्यामी हैं, आपको मेरे मित्र की हालत का ज्ञान होगा. दुर्भाग्य से इस समय मेरे पास आपकी उदी भी नहीं है. बाबा, अपने मित्र की प्राण रक्षा के लिए मैं आपके सामने जलाई हुई धूप की इस भस्म को आपकी उदी मानकर प्रयोग कर रहा हूं. अब इसकी रक्षा का दायित्व आप पर है. इतना कहकर नारायण ने धूप की राख मित्र के पैर पर मल दी और अपनी पत्नी के साथ साईंनाम जप करने लगे. कुछ ही मिनटों में साईं बाबा ने अपने भक्त की प्रार्थना सुन ली. मित्र की पीड़ा ग़ायब हो गई और वह पहले की तरह सामान्य और स्वस्थ हो गए.

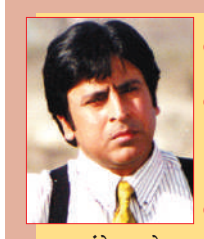

## शिरडी सांई बाबा फाउंडेशन (रजि.)



- साईंबाबा की शिक्षा और संदेश को जन-जन तक पहुंचाना.
- वृंदावन में मथुरा गिरिराज साईं मंदिर, पुस्तकालय, संग्रहालय, अस्पताल, स्कूल, कॉलेज और धर्मशाला की स्थापना करना.
- चारों धामों में साईं मंदिर, पुस्तकालय, संग्रहालय, अस्पताल, स्कूल, कॉलेज और धर्मशाला की स्थापना करना.
- उचित स्थानों पर साईं वेलनेस सेंटर स्थापना करना.
- शिरडी साईंबाबा फाउंडेशन के तहत संपूर्ण विश्व में साईं भक्तों का परिवार बनाना.
- स्वर्गीय लक्ष्मी बाई शिंदे, जिन्हें शिरडी की पवित्र भूमि पर साईं बाबा ने समाधि में जाने से पूर्व नौ चांदी के सिक्के दिए थे, की स्मृति में मंदिर स्थापित करना.
- प्राकृतिक आपदा के पीड़ितों की मदद करना.
- गांवों में प्राथमिक स्तर पर बच्चों को मुफ़्त शिक्षा मुहैया कराना.
- ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए कोष स्थापित करना.

### सदस्यता योजनाएं

इस फाउंडेशन का सदस्य बनने वाले व्यक्ति को उपहारस्वरूप फाउंडेशन द्धारा निर्मित फिल्म शिरडी साईं बाबा की वीसीडी, ऑडियो सीडी और साईं सच्चरित्र की पुस्तक दी जाएगी. इसके साथ ही वृंदावन मंदिर के फ्रेम में साईं बाबा की तस्वीर और शीघ्र प्रकाशित होने वाली अन्य सामग्री प्रदान की जाएगी. यह सब चुनी गई विभिन्न सदस्यता योजनाओं के आधार पर होगा.

### आजीवन सदस्यता

कोई भी व्यक्ति या संस्था इस फाउंडेशन में आजीवन सदस्यता हासिल कर सकता है. इसके लिए आपको 25,000 रूपये का शुल्क देना होगा. इस योजना के तहत आपको मिलेगा:

- श्री शिरडी साईं बाबा की ताम्र की सिंहासन वाली प्रतिमा
- दो डीवीडी, साईं चरित्र (बड़ी)
- लॉकेट (बड़ा), चरण (मार्बल)
- चाबी का छल्ला
- साईं बाबा के पारदर्शी कर्णफूल
- अंगूठी, पटका, ब्रेसलेट, साईं बॉक्स, यूडीआई और घड़ी

### विशेष सदस्य

फाउंडेशन का विशेष सदस्य बनने के लिए आपको 10,000 रूपये का शुल्क अदा करना होगा. और आपको मिलेगा:-

- सिंहासन के साथ साईं बाबा की प्रतिमा
- दो डीवीडी
- साईं चरित्र(बड़ी), लॉकेट (बड़ा), चरण (मार्बल)
- चाबी का छल्ला
- साईं बाबा के पारदर्शी कर्णफूल
- अंगूठी, पटका, ब्रेसलेट, साईं बॉक्स, यूडीआई और घड़ी

### कार्यकारिणी सदस्य

कार्यकारिणी सदस्य बनने के लिए निर्धारित शुल्क 5,000 रूपये है. इसमें आपको मिलेगा:

- साईं बाबा की प्रतिमा
- दो डीवीडी, साईं चरित्र (बड़ी)
- लॉकेट (बड़ा), चरण (मार्बल)
- चाबी का छल्ला
- साईं बाबा के पारदर्शी कर्णफूल
- अंगूठी, पटका, ब्रेसलेट, साईं बॉक्स, यूडीआई और घड़ी

### सामान्य सदस्य

सामान्य सदस्यता की अवधि तीन वर्ष और शुल्क 3,000 रूपये है. इसमें आपको मिलेगा:

- साईं बाबा की प्रतिमा
- दो डीवीडी, साईं चरित्र (बड़ी)
- लॉकेट (बड़ा), चरन (मार्बल)
- चाबी का छल्ला
- साईं बाबा के पारदर्शी कर्णफूल
- अंगूठी, पटका, ब्रेसलेट, साईं फोटो (कार के लिए), यूडीआई और घड़ी

नाम.......................................................

पता.......................................................

टेलीफोन...............................मोबाईल...............................

ई-मेल.......................................................

सदस्य बनने के लिए अपना पूरा विवरण निम्न पते पर अपने ड्राफ्ट के साथ भेजें

हस्ताक्षर

156, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065, फोन नं. 011-46567351/52




AUM Infrastructure & Developers

Booking of Villa / Flat / Plot

For Enquiries Contact:
Aum Infrastructure & Developers
Regd. Office:
156, Sant Nagar, East of Kailash
New Delhi- 110065
Tel.: 011-46594226 / 46594228
Email: shirdisaibabafounadation@gmail.com

Giriraj Sai Hills is a heavenly abode in the heart of Krishna nagri of Vrindavan it' s a lifestyle concept that provides for state of the art facilities amidst peaceful living environments. The project is a dream child of Shri Aushim Khetarpal, one of the ardent devotees of Shirdi Sai Baba who has an award winning movie on the life of Shirdi Sai Baba and a television serial to his credit.

The Temple : Live and Love in God's peculiar light at Vrinda Sai Dham with awe inspiring detailing in the structure. The temple has been designed with dedicated space for every deity, from Vishnu to Krishna and Gurus like Guru Nanak and Sai Baba, Shiva's Jyotirlinga and Sai Baba's Arti room. The Temple is ideally located at the Chatikra crossing at Vrindavan.
Belief is truth held in the mind; faith is a fire in the heart. The faith and belief in the eternal being has enabled us to plan The Sai Radhey Girdhari Temple - depicting Krishna Raas with Radha, also featuring Sai Dwarkamai, Sai Leela Hall, Meditation Centre, Amphitheatre, Museum, Goushala and Research Centre with a huge Krishna statue with Govardhan Parvat.

Features : Giriraj Sai Hills offers an innovative selection of Fully Furnished and Spacious Studio, One Bedroom and Two bedroom Apartments of sizes 360 sq.ft, 561 sq.ft and 997 sq.ft. respectively along with Expandable Furnished Villas of 1800 sq.ft.
Don't settle for the noise, congestion and traffic commercial surrounding, instead opt for the quiet convenience of prestigious Giriraj Sai Hills.
Below are few listed features:

- Eco Friendly Premises
- World Class Interiors
- Designed in accordance to tenets of Vaastu
- Provision for DTH in all homes
- CCTV facility
- Ample of parking space
- 24 hours uninterrupted water supply
- Reverse Osmosis water system for each apartment
- Earthquake resistant structure as per ISI codes
- Fire system installed at strategic points
- Rain Water Harvesting
- Children's Play Area
- Cab Facility
- Easy access to Commercial Health Care Centre offering Convenience Outlets, Restaurants, ATMs and state of the art Medical Facilities
- 24 hours flute music in all apartments
- Luxurious Hotel


## सुधीर दलवी: स्क्रीन के साईंबाबा



सुधीर दलवी को फ़िल्मों में लाने का श्रेय संजीव कुमार को जाता है. हरिभाई यानी संजीव कुमार के जिगरी दोस्त सुधीर दलवी ने पहले उनके कुछ नाटकों में अभिनय किया और फिर हरिभाई की प्रेरणा पाकर फ़िल्मों में अभिनेता बनने के लिए संघर्ष करने लगे. फ़िल्मी दुनिया में सुधीर दलवी को पहचान तब मिली, जब उनके द्धारा अभिनीत एक नाटक को प्रसिद्ध संगीतकार पांडुरंग दीक्षित ने देखा. दीक्षित उन दिनों मनोज कुमार की फ़िल्म शिरडी साईं बाबा की रूपरेखा बना रहे थे. मनोज कुमार ने जब साईं बाबा के गेटअप में सुधीर का लुक टेस्ट किया तो दंग रह गए. पांडुरंग की खोज पर वह ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे थे. फ़िल्म रिलीज़ होने के बाद सुधीर दलवी स्क्रीन के साईं बाबा के रूप में प्रसिद्ध हो गए. फ़िल्म इंडस्ट्री के प्रसिद्ध शोमैन राजकपूर एवं जुबली स्टार राजेंद्र कुमार तक ने उनमें अपने आराध्य साईं बाबा के असीम रूप के पावन दर्शन करते हुए चरण स्पर्श किए.

27 वर्षों बाद ऑसिम खेत्रपाल की फ़िल्म शिरडी के साईं बाबा में एक बार फिर सुधीर ने साईं बाबा का मुख्य किरदार निभाया और राष्ट्रपति वेंकटरमण के हाथों पुरस्कृत हुए. प्रस्तुत हैं सुधीर दलवी से हुई बातचीत के प्रमुख अंश:

***जब भक्त आपमें अपने आराध्य साईं बाबा के दर्शन करते हैं, तब आपको कैसा महसूस होता है?***

सच कहूं तो अच्छा नहीं लगता. मैं उन सच्चिदानंद साईं का केवल चरित्र निभा रहा हूं. न तो मैं साईं हूं और न हो सकता हूं. लोगों की श्रद्धा को मैं हृदय से प्रणाम करता हूं. मैं तो साईं का शुक्रगुज़ार हूं कि उन्होंने मुझे जीवन में इतना बड़ा अवसर दिया.

***आप बार-बार एक ही क़िरदार करके बोर नहीं हो जाते?***

बोर होने का सवाल ही नहीं उठता. आप हर साल एक तरह का त्योहार मनाकर हर रोज़ एक सी पूजा करके बोर होते हैं क्या? साईं का क़िरदार निभाना तो मेरी पूजा है.

***आपने मनोज कुमार के बाद ऑसिम खेत्रपाल की फ़िल्म में साईं बाबा का क़िरदार निभाया. दोनों के बीच किस तरह का अंतर महसूस करते हैं?***

दोनों ही साईं के भक्त हैं. ऑसिम जी के भीतर साईं की दीवानगी है. उनसे बात करके ऐसा अनुभव होता है, मानो वह अपने सामने साईं बाबा को देखकर बात कर रहे हैं. जहां तक मनोज कुमार साहब की बात है तो उन जैसा टेक्नीशियन अब तक पैदा ही नहीं हुआ.

***आपके पसंदीदा निर्माता-निर्देशक कौन-कौन हैं?***

पिछले 30-32 सालों से मैं अभिनय कर रहा हूं. अब तक 250 से भी ज़्यादा प्रोजेक्ट में काम कर चुका हूं. इस लंबी यात्रा में बहुत लोगों ने मुझे प्रभावित किया. मुझे ऐसा लगता है कि जिन लोगों के साथ मुझे काम करने का मौक़ा मिला, वे मुझे कुछ न कुछ सिखाकर अवश्य गए.

***जब कभी वक़्त मिलता है तो क्या करते हैं?***

स्वर्गीय के एल सहगल के गीत सुनना मुझे बहुत पसंद है. वैसे मेहंदी हसन, ग़ुलाम अली और जगजीत सिंह की ग़ज़लें भी सुनता हूं.

***चौथी दुनिया अखबार और शिरडी साईं बाबा फाउंडेशन ने जन-जन में साईं बाबा का प्रचार करने के लिए हाथ मिलाया है. इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?***

यह एक बहुत ही अच्छी पहल है. अब तक प्रिंट मीडिया ने इस तरह का कोई क़दम नहीं उठाया था. निस्संदेह चौथी दुनिया और शिरडी साईं बाबा फाउंडेशन बधाई के पात्र हैं. साईं की कृपा से वे अपने अभियान में सफल हों, यही मेरी शुभकामना है.

अनंत विजय



feedback@chauthiduniya.com

## पुस्तक अंश मुन्नी मोबाइल






प्रदीप सौरभ



feedback@chauthiduniya.com

## चर्चा कुंभनगर की



डॉ.कमलकांत बुधकर



गंगा के दूसरे तट से हरिद्वार के घाट की एक झलक (यह तस्वीर 1866 की है)

kk@budhkar.in

आज भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा दुपहिया वाहन निर्माता देश है और कार बाज़ारों में इसका 11वां स्थान है. लिहाज़ा उक्त पुरस्कार व्यापक अनुसंधान, विकास, डिज़ाइनिंग, उत्कृष्टता एवं खोजपरकता के क्षेत्र में निर्माताओं के सघन प्रयासों को सम्मानित करते हैं.



[illegible]





टा[illegible]

# कुचीने ल्युवे का नया मॉड्यूलर किचन

मॉड्यूलर किचन बनाने वाली इटली की कंपनी [illegible]



[illegible]

ऑ[illegible]



# इंडियन कार एंड मोटरसाइकिल ऑफ द इयर-2010



जे[illegible]

समारोह में मौजूद जे के टायर इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड [illegible]

दूसरे और 33 अंकों के साथ होंडा जैज़ तीसरे स्थान [illegible]



# लग्ज़री ऑटो में सफर का सुख

आपको और हमें अक्सर कहीं न कहीं जाने के लिए ऑटो में सफर करना पड़ता है. अलग-अलग शहरों में ऑटो की जैसी हालत है, उससे तो ऑटो में सफर करने के नाम से ही लोगों को पसीने आने लगते है. लेकिन, टीवीएस कंपनी ने बाजार में एक ऐसा ऑटो उतारा है, जिसे सही मायने में लग्ज़री ऑटो कहा जा सकता है. इसमें प्र[illegible]त कई उपकरण कारों जैसे हैं. इसका फोर स्ट्रोक इंजन दो सौ [illegible]



feedback@chauthiduniya.com

[illegible] : email : advt@chauthiduniya.com

# 2010

## January

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

## February

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |

## March

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

## April

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | | |

## May

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| 31 | | | | | | |

## June

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

## July

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

## August

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| 30 | 31 | | | | | |

## September

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | | | |

## October

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

## November

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

## December

| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

श्री के. रोसैया
कार्यालय फोन : 040-23456698,23455205,23452933
कार्यालय फैक्स : 040-23452498

श्री दोरजी खांडू
कार्यालय फोन : 0360-2212456,2212173
कार्यालय फैक्स : 0360-2217767

तरूण कुमार गोगोई
कार्यालय फोन : 0361-2262222,2266188,2262781
कार्यालय फैक्स : 0361-2262069

श्री नीतीश कुमार
कार्यालय फोन : 0612-2223886,2224784

डॉ. रमन सिंह
कार्यालय फोन : 0771-2221000,2221001,2331001
कार्यालय फैक्स : 0771-2221306

शीला दीक्षित
कार्यालय फोन : 011-23392020,23392030
कार्यालय फैक्स : 011-23392111

श्री दिगंबर कामत
कार्यालय फोन : 0832-2419841,2411049
कार्यालय फैक्स : 0832-2419846

श्री नरेंद्र मोदी
कार्यालय फोन : 079-23232611,18
कार्यालय फैक्स : 079-23222101

श्री भूपिंदर सिंह हूड्डा
कार्यालय फोन : 0172-2749396,2749409
कार्यालय फैक्स : 0172-2740774

प्रो. प्रेम कुमार धूमल
कार्यालय फोन : 0177-2625400, 2625819
कार्यालय फैक्स : 0177-2625011

श्री उमर अब्दुल्लाह
कार्यालय फोन, जम्मू : 0191-2546466,2546766
श्रीनगर : 0194-2452224,2452228
कार्यालय फैक्स, जम्मू: 0191-2545529
श्रीनगर 0194-2452120

कार्यालय फोन : 0651-2281500,2281400
कार्यालय फैक्स : 0651-2205100

श्री बी.एस. येदीयुरप्पा
कार्यालय फोन : 080-22253414, 22253424
कार्यालय फैक्स : 080-22281021, 22253660

श्री वी.एस.अच्युतानंदन
कार्यालय फोन : 0471-2333812, 2332184
कार्यालय फैक्स : 0471-2333489

श्री शिवराज सिंह चौहान
कार्यालय फोन : 0755-2551581, 2551433
कार्यालय फैक्स : 0755-2551781, 2540501

श्री अशोक चौहान
कार्यालय फोन : 022-22025151, 22025222
कार्यालय फैक्स : 022-23633272

श्री ओकराम इबोबी सिंह
कार्यालय फोन : 0385-2220137
कार्यालय फैक्स : 0385-2221817

डॉ. डी. डी लपांग
कार्यालय फोन : 0364-2224282
कार्यालय फैक्स : 0364-2227913

श्री पु ललथहवला
कार्यालय फोन : 0389-2322150, 2322205, 2322245
कार्यालय फैक्स : 0389-2322245

श्री निफ्यु रिओ
कार्यालय फोन : 0370-2222171, 2270097
कार्यालय फैक्स : 0370-2270087

श्री नवीन पटनायक
कार्यालय फोन : 0674-2531100, 2535100, 2531500
कार्यालय फैक्स : 0370-2270087

श्री वैथीलिंगम
कार्यालय फोन : 0413-2333399, 2335328, 2335530
कार्यालय फैक्स : 0413-2333135

श्री प्रकाश सिंह बादल
कार्यालय फोन : 0172-2740325, 2740769
कार्यालय फैक्स : 0172-2741821

श्री अशोक गहलोत
कार्यालय फोन : 0141-2227351, 2227462
कार्यालय फैक्स : 0141-2227687

श्री पवन चामलिंग
कार्यालय फोन : 03592-222263, 222575
कार्यालय फैक्स : 03592-222304, 222536

श्री एम. करूणानिधि
कार्यालय फोन : 044-25672345
कार्यालय फैक्स : 044-25671441

श्री माणिक सरकार
कार्यालय फोन : 0381-2324000, 2324003, 2324318
कार्यालय फैक्स : 0381-2223201

कुमारी मायावती
कार्यालय फोन : 0522-2239296
कार्यालय फैक्स : 0522-2239234

श्री रमेश पोखरियाल
कार्यालय फोन : 0135-2665090, 2665100
कार्यालय फैक्स : 0135-2665722

श्री बुद्ध देव भट्टाचार्य
कार्यालय फोन : 033-22145555, 22145588
कार्यालय फैक्स : 033-22145480

Postal Regn. No. DL/ND-11/6139/2009-11, RNI No. 45843/86

चौथी दुनिया दिल्ली, 4 जनवरी–10 जनवरी 2010

अष्टविनायक के बैनर तले बन रही फ़िल्म *रन भोला रन* में गोविंदा और तुषार कपूर भी काम कर रहे हैं. पिछले वर्ष जब इस फ़िल्म की घोषणा हुई थी तो तनुश्री बढ़चढ़ कर अपने किरदार के बारे में बता रही थीं.

# बदली-बदली सी प्रियंका चोपड़ा

यशराज बैनर की हालिया रिलीज़ फ़िल्म *प्यार इंपोसिबल* के बाद से प्रियंका चोपड़ा कुछ ज्यादा ही दार्शनिक अंदाज़ में बात करने लगी हैं. प्रियंका बताती हैं कि फ़िल्म के हीरो के साथ उन्हें जीवन के नए अनुभव सीखने को मिले हैं. इस फ़िल्म में हीरो की भूमिका उदय चोपड़ा ने निभाई है.

प्रियंका का मानना है कि ज़िंदगी में कामयाबी के लिए लक्ष्य का महत्व कम होता है. लक्ष्य पाने के लिए की गई परिश्रम यात्रा सबसे महत्वपूर्ण होती है. इस दरम्यान आदमी कई हालातों से गुज़रता है. मंज़िल की सफलता के साथ मन का सुकून बेहद ज़रूरी है. फ़िल्म *प्यार इंपोसिबल* के दौरान प्रियंका प्यार भरी भावनाओं को समझना और ज़ाहिर करना सीख गई हैं. ख़ुद प्रियंका इस बात को स्वीकार करती हैं प्यार की पहल करने में लड़के आगे हैं या लड़कियां? प्रियंका इस मामले में लड़कों को ही आगे रखती हैं. अगर हर मामले में लड़के ही शामिल होते हैं तो फिर लड़कियां क्या करती हैं? प्रियंका इस बात का जवाब भी बेबाकी से देती हैं. उनकी मानें तो लड़की के मन में किसी लड़के के प्रति वैसी भावनाएं होने की स्थिति में वह सारी बातें इशारों ही इशारों में कह देती है. आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि प्रियंका अचानक ऐसी बातें क्यों करने लगीं. चलिए, इस बात का खुलासा भी कर देते हैं. दरअसल, उन्हें लिखने का बेहद शौक़ है. जब भी मौक़ा मिलता है तो वह कोई लेख या कविता लिखती रहती हैं. उन्होंने अभी तक किताब लिखने की सोची तो नहीं है, पर क्या पता कि प्रियंका की तस्वीर फ़िल्मी पोस्टरों के साथ-साथ किसी किताब के कवर पेज पर भी देखने को मिल जाए.

# वृंदा पारेख की तुलना बिपाशा से

दक्षिण भारतीय फ़िल्मों की नायिका वृंदा पारेख डस्की क्वीन हैं. लोग उन्हें गजब की काया की मल्लिका मानते हैं. शायद इसलिए उनकी तुलना बिपाशा बसु से की जाती है. वह ख़ुद भी इस तुलना से बेहद ख़ुश हैं. दरअसल वह उन्हें अपनी प्रेरणा भी मानती हैं. बिपाशा के साथ कॉरपोरेट में वह बतौर सपोर्टिंग एक्ट्रेस काम कर चुकी हैं. वह दक्षिण की कई सुपरहिट फ़िल्मों में अपने हाथ आज़मा चुकी हैं. कई विज्ञापनों में अभिनय और हिंदी, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ आदि भाषाओं में बनी फ़िल्मों में आइटम नंबर करने वाली वृंदा के अभिनय को देखकर शायद ही कोई यह माने कि वह जन्म से गुजराती हैं. मुंबई की ग्लैमरस पेज थ्री पार्टियों में अक्सर नज़र आने वाली वृंदा के बारे में यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि उन्हें जानवरों से बेहद प्यार है. अपने इसी प्रेम के चलते वह पशु कल्याण के कामों में सक्रिय रहती हैं. उनका मानना है कि जानवर भी ईश्वर की अनमोल रचना हैं, इसलिए उनका जीवन उतना ही क़ीमती है, जितना किसी मनुष्य का.

# जैक्वलीन की क़िस्मत चमकी

श्रीलंका से आई मॉडल को बॉलीवुड में क़दम रखते ही बिग बी के साथ काम करने का मौक़ा मिल गया. किसी भी अपकमिंग एक्ट्रेस के लिए इससे बड़ी बात और क्या होगी. आधी मलेशियाई और आधी श्रीलंकाई सभ्यता में पली-बढ़ी जैक्वलीन फर्नांडीज को एथलेटिक्स और ड्रामा में भी ख़ूब दिलचस्पी है. जैक्वलीन को फ़िल्म अलादीन में काम करने के लिए हिंदी सीखने में कोई असुविधा नहीं हुई. वह कहती हैं कि उन्हें अलग-अलग भाषाएं सीखने का शौक़ है और हिंदी सीखने में उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि यह भाषा उन्हें बहुत मधुर लगती है. शायद यही वजह है कि फ़िल्म के निर्देशक सुजॉय घोष को उन्हें कास्ट करने में ज़्यादा परेशानी नहीं हुई. जैक्वलीन ने बर्लिटज विश्वविद्यालय से फ्रेंच, स्पेनिश और अरबी भाषा की पढ़ाई भी की है. वह कहती हैं कि आज़ाद और सुशिक्षित होना सबके लिए बेहद ज़रूरी है. किसी भी काम को उत्कृष्टता से करने और उसमें अव्वल रहने के लिए वह कोई कोर कसर नहीं छोड़तीं. इसी विश्वास के दम पर उन्होंने श्रीलंका का प्रतिनिधित्व करते हुए 2006 में मिस यूनीवर्स का खिताब जीता और फिर वहीं एक चैनल पर बिज़नेस प्रोग्राम में एंकरिंग करने लगीं. वह वहां के एक अख़बार में रेग्युलर कॉलम भी लिखती रही हैं. समाजसेवा उनकी चाहत है, इसलिए श्रीलंका में वह अपना एनजीओ भी चलाती हैं. इन दिनों वह शाहिद कपूर के साथ वीआईपी लगेज के विज्ञापन में भी नज़र आ रही हैं. आगे वह किन नई फ़िल्मों में काम कर रही हैं, इस सवाल पर वह चुप्पी साध लेती हैं. उनका कहना है कि किसी भी फ़िल्म के फ्लोर पर जाने से पहले वह कुछ भी नहीं बता सकती. उन्हें निर्माता से सख्त हिदायत मिली हुई है. चलिए हम भी उनकी व्यसायिक मजबूरी समझते हुए उनको बेस्ट ऑफ लक कहते हैं.

# आदत से मजबूर तनुश्री

कुछ ही दिन हुए, जब नाना पाटेकर से विवाद के चलते फ़िल्म *हॉर्न ओके प्लीज* से तनुश्री दत्ता को बाहर का रास्ता दिखा दिया गया था. सबको लगा था कि उन्होंने सबक सीख लिया होगा, लेकिन तनुश्री को अभी भी समझ नहीं आई है कि जल में रहकर मगर से बैर नहीं किया जाता. अगर समझ आई होती तो वह फिल्म *रन भोला रन* की यूनिट को परेशान न करतीं. कभी डेट्स को लेकर तो कभी साइनिंग अमाउंट को लेकर फिल्म को लटकाने के चक्कर में उनका ही करियर लटक गया है. उन्हें फिल्म से बाहर कर दिया गया है. ग़ौरतलब है कि श्री अष्टविनायक के बैनर तले बन रही इस फ़िल्म में गोविंदा और तुषार कपूर भी काम कर रहे हैं. पिछले वर्ष जब इस फ़िल्म की घोषणा हुई थी तो तनुश्री बढ़चढ़ कर अपने किरदार के बारे में बता रही थीं, पर अब उनके तोते उड़े हुए हैं. हालांकि उनका कहना है कि बार-बार फ़िल्म को डिले किया जा रहा था और तयशुदा डेट के अतिरिक्त वह समय दे पाने में असमर्थ थीं. इस वजह से उन्होंने फ़िल्म छोड़ने का फ़ैसला लिया. वह किसी भी तरह के विवाद से इंकार करती हैं. उनकी मानें तो इस तरह की अफ़वाह सिर्फ़ और सिर्फ़ मीडिया की ही देन हैं. अब सच्चाई चाहे जो भी हो, करियर तो आपका ही बर्बाद हो रहा है मैडम! क्योंकि इस समय आपके पास बहुत अधिक फ़िल्में तो हैं नहीं.

चौथी दुनिया ब्यूरो
feedback@chauthiduniya.com

## आने वाली फ़िल्म

### चांस पे डांस

इश्क विश्क और फिदा के बाद निर्देशक केन घोष और शाहिद कपूर की जोड़ी फ़िल्म चांस पे डांस से वापसी कर रही है. फ़िल्म में शाहिद कपूर एक ऐसे संघर्षरत युवा की भूमिका में हैं, जिसके लिए डांस किसी जुनून से कम नहीं. फ़िल्मों में बिग ब्रेक की तलाश में वह कई छोटे मोटे काम करके अपना गुज़ारा करता है. इसी दौरान उसकी मुलाक़ात टीना से होती है. टीना पेशे से कोरियोग्राफर है. दोनों की ख़ूब पटती है. परिस्थितिवश उसे बच्चों के एक ग्रुप को डांस रियलिटी शो के लिए प्रशिक्षित करना पड़ता है. तभी उसे फ़िल्म में काम करने का ऑफर मिलता है. एक तरफ़ करियर है और दूसरी तरफ़ उसका प्यार एवं बच्चों की प्रतियोगिता. अब उसे अपने करियर और प्यार में से किसी एक को चुनना है. नायक के इसी कशमकश के बीच फ़िल्म की कहानी आगे बढ़ती है. शाहिद की प्रेमिका की भूमिका में जेनेलिया डिसूजा हैं. शाहिद के साथ यह उनकी पहली फ़िल्म है. इसके अलावा अरशद वारसी भी एक महत्वपूर्ण किरदार में दिखाई देंगे. निर्माता रॉनी स्क्रूवाला हैं. फ़िल्म म्यूज़िकल ड्रामा है. ज़ाहिर है, गीत-संगीत जोरदार होगा. अदनान सामी ने इस बात को ध्यान में रखते हुए इस फ़िल्म का संगीत तैयार किया है. 15 जनवरी को रिलीज़ हो रही इस फ़िल्म के प्रति युवाओं में अभी से ज़बर्दस्त क्रेज़ देखा जा रहा है.

# चौथी दुनिया

बिहार झारखंड

दिल्ली, 4 जनवरी–10 जनवरी 2010

www.chauthiduniya.com

## झारखंड में नहीं चला नीतीश, पासवान और लालू का जादू

# महारथी मात खा गए

सरोज सिंह

जनता का फ़ैसला सुन सियासी दल और उनके रहनुमा हैरान–परेशान हैं. खंडित जनादेश न तो झारखंड की मांग थी और न ही नेता ऐसा चाहते थे. सभी दिग्गज नेताओं को लग रहा था कि पिछले नौ सालों से ठगे और लूटे जा रहे इस राज्य की जनता स्थायी सरकार के लिए वोट करेगी तथा झूठे वादे करने वालों एवं भ्रष्टाचारियों को सबक सिखाएगी, लेकिन जब नतीजे आए तो एकबारगी लोगों को अपनी आंखों–कानों पर भरोसा ही नहीं हुआ. जनता का फ़ैसला यह था कि सारे नेता कमोबेश एक जैसे हैं और झारखंड की बर्बादी के लिए बराबर के ज़िम्मेदार हैं. इसी वजह से भ्रष्टाचार और अपराध का मुद्दा लोगों को प्रभावित नहीं कर सका. लगभग सभी दाग़ी नेता चुनाव जीत गए. जनता ने स्थानीय मसलों को तवज्जो देकर स्थायी सरकार की हवा निकाल दी. यही वजह रही कि कई सूरमा चुनावी अखाड़े में पस्त हो गए. पड़ोसी राज्य के चुनाव में अपना सब कुछ दांव पर लगा देने वाले बिहार के तीन दिग्गजों नीतीश कुमार, रामविलास पासवान एवं लालू प्रसाद को भी जनता ने उनकी हैसियत का एहसास करा दिया. बिहार की राजनीति को अपने इशारों पर नचाने वाले उक्त तीनों राजनीतिज्ञ झारखंड चुनाव में बुरी तरह मात खा गए.

सीटों के बंटवारे के समय जदयू, लोजपा और राजद में जिस तरह जोड़–तोड़ चल रही थी, उससे लग रहा था कि इन पार्टियों के प्रमुख झारखंड चुनाव को कितनी गंभीरता से ले रहे हैं. इस साल बिहार में भी चुनाव होने हैं, इस कारण भी वे सभी तरह के प्रयोग झारखंड में कर लेना चाहते थे. भाजपा की झारखंड इकाई पहले दिन से ही जदयू के साथ किसी भी तरह के तालमेल के ख़िलाफ़ थी. लोकसभा चुनाव का उदाहरण देकर भाजपाई बार–बार यह जता रहे थे कि जदयू को सीट देने का मतलब साफ़ शब्दों में बर्बादी है, लेकिन केंद्रीय नेताओं के दबाव में जदयू के लिए भाजपा ने चौदह सीटें खाली कर दीं.

इसी तरह लालू प्रसाद को भी रामविलास पासवान और वामदलों के साथ सीटों के बंटवारे में काफी पसीना बहाना पड़ा. उसके बाद सारे नेताओं ने चुनावी दौरों की झड़ी लगा दी, पर जब नतीजे निकले तो उनके होश उड़ गए. जदयू को मात्र दो सीटों तमाड़ एवं छतरपुर में ही सफलता मिली और डुमरी, पांकी एवं बाधमारा में उसके प्रत्याशी दूसरे स्थान पर रहे. राजा पीटर की जीत पार्टी से कहीं अधिक उनकी व्यक्तिगत जीत ही कही जा सकती है. हद तो यह हो गई कि प्रदेश अध्यक्ष जलेश्वर महतो और पार्टी के बड़े नेता शैलेंद्र महतो भी चुनाव नहीं जीत पाए. पांकी, विश्रामपुर, बाधमारा, बोकारो, हुसैनाबाद, भावनाथपुर, देवघर, मांडू, डुमरी, शिकारीपाड़ा, चंदनकियारी एवं सारठ में जदयू के प्रत्याशी धराशायी हो गए. पिछले चुनाव में पार्टी के खाते में छह सीटें थीं, जो अब दो रह गई हैं. नीतीश कुमार बार–बार कहते रहे कि झारखंड में बिहार मॉडल की चर्चा है और इस राज्य की जनता भी उन्हें निराश नहीं करेगी, लेकिन जनता ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया.

इस चुनाव के लिए जदयू ने अपने चार बड़े नेताओं डॉ. भीम सिंह, श्रवण कुमार, रवींद्र सिंह और उपेंद्र प्रसाद को प्रभारी बनाया था. ख़ुद नीतीश कुमार एवं शरद यादव ने चार दर्ज़न से अधिक सभाओं के माध्यम से हवा बनाने की कोशिश की, पर सब बेकार गया. चुनाव परिणामों पर नीतीश कुमार ने कहा कि जनता का फ़ैसला उन्हें स्वीकार है, लेकिन झारखंड को झटका लगा है. उन्होंने कहा कि वहां मेरी पार्टी बड़ी ताक़त नहीं है, पर नतीजों से निराश होने की ज़रूरत नहीं है.

झारखंड के नतीजों से लालू प्रसाद को भी गहरा झटका लगा है. पांच सीटों पर विजय पाकर लालू किसी तरह अपनी इज़्ज़त तो बचा ले गए, पर राज्य और दिल्ली की राजनीति में एक बार फिर अपना दबदबा कायम करने का उनका सपना चूर–चूर हो गया. उनका पुराना माय (मुस्लिम और यादव ) समीकरण तो तार–तार हुआ ही, साथ ही बढ़ती महंगाई का उनका चुनावी मुद्दा भी नाकाम रहा. लालू प्रसाद ने पैर में मोच के बावजूद लगभग 200 चुनावी सभाओं को संबोधित किया, पर पांच सीट ही जीत पाए. पार्टी के दमदार नेता गिरिनाथ सिंह गढ़वा से चुनाव हार गए. इसी तरह विश्रामपुर से पूर्व मंत्री रामचंद्र सिंह चंद्रवंशी और मनिका से रामचंद्र सिंह हार गए. विदेश सिंह को टिकट न देकर भी लालू प्रसाद ने गलती कर दी. लालू प्रसाद झारखंड चुनाव में दमदार जीत दर्ज़ कर यह बताना चाहते थे कि न केवल बिहार, बल्कि पड़ोसी राज्य में भी उन्हें कोई दरकिनार नहीं कर सकता है. बिहार में भी इसी साल चुनाव होने हैं. इस कारण भी लालू प्रसाद ने पूरी ताक़त के साथ झारखंड में अभियान चलाया, ताकि पड़ोसी राज्य में जीत का फ़ायदा बिहार में मिले, लेकिन जनता ने जो फ़ैसला सुनाया, उससे सारा ताना–बाना बिखर गया. चुनाव नतीजों पर उन्होंने कहा कि सेकुलर ताक़तों के बिखराव से ऐसा हुआ. झारखंड में नीतीश मॉडल फेल हो गया.

इसी तरह लोजपा की भी दुर्गति इस चुनाव में हो गई. रामविलास पासवान के लाख प्रयासों के बावजूद पार्टी अपना खाता भी नहीं खोल सकी. झारखंड में राजद–लोजपा गठबंधन के प्रदर्शन के बाद बिहार में इसे बनाए रखने को लेकर भी अंदरखाने मंथन शुरू हो गया है. नीतीश, पासवान और लालू के अलावा झारखंड के भी कई राजनीतिक सूरमाओं को इस चुनाव के नतीजों से गहरा आघात लगा है. कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप कुमार बालमुचू, विधायक दल के नेता मनोज यादव और विधानसभा अध्यक्ष आलमगीर आलम को जनता ने नकार दिया. इसके अलावा स्टीफन मरांडी, डॉ. रामेश्वर उरांव, फुरकान अंसारी, बागुन सुम्ब्रई, नियेल तिर्की और रामदयाल मुंडा आदि नेताओं का विधानसभा पहुंचने का सपना चकनाचूर हो गया.

इसी तरह भाजपा के थिंक टैंक सरयू राय एवं सुधीर महतो भी हार गए. इनके अलावा भानु प्रताप शाही, कमलेश सिंह, जोबा मांझी आदि को भी पराजय का मुंह देखना पड़ा. मतलब यह है कि सारे किंगमेकरों को जनता ने खारिज कर दिया. अब इन नेताओं के लिए यह समय मंथन का है कि ऐसी क्या बात हो गई, जिसके चलते जनता ने उनकी बात नहीं मानी. बिहार चुनावी साल में प्रवेश कर चुका है. इसका कुछ न कुछ असर बिहार में होने वाले विधान सभा चुनाव पर ज़रूर पड़ेगा. जाहिर है खुद को बिहार की राजनीति का किंगमेकर समझने वाले तीनों दिग्गजों को भी सही फ़ैसले पर पहुंचना ही होगा.


feedback@chauthiduniya.com

## स्थायी सरकार और भ्रष्टाचार का मुद्दा नहीं चला

झारखंड की जनता ने एक बार फिर खंडित जनादेश देकर राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति को बरक़रार रखा. यूपीए और एनडीए में से कोई भी गठबंधन चुनाव पूर्व तालमेल केआधार पर सरकार बनाने की स्थिति में नहीं आ सका. पिछले नौ वर्षों केअंदर छह सरकारों के कार्यकाल देख चुकी जनता से इस बार स्पष्ट जनादेश की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन उसने चुनाव में यूपीए-एनडीए दोनों को झटका दिया है. बाहुबली और माफियाई पृष्ठभूमि के नेताओं को जनता ने सिर-आंखों पर बैठाया. जेलों में बंद छह माओवादियों में से मात्र तोरपा से झामुमो के टिकट पर पौलूस सुरीन ही जीत पाए. पलामू के कई विधानसभा क्षेत्रों से खड़े माओवादियों को जनता ने नकार दिया. मतलब यह निकलता है कि चुनाव में न तो स्थायी सरकार का मुद्दा चला और न मधु कोड़ा के भ्रष्टाचार का. दाग़ी और अपराधी छवि वाले नेताओं का जनता ने साथ दिया. एक सकारात्मक संकेत यह मिला कि आर्थिक मंदी और औद्योगिक रुग्णता के बावजूद ट्रेड यूनियन मोर्चे इंटक के 10 उम्मीदवारों में से 8 अपनी सीटें निकालने में सफल रहे. इनमें बेरमो से इंटक के राष्ट्रीय महामंत्री राजेंद्र प्रसाद सिंह, धनबाद से मन्नान मल्लिक और विश्रामपुर से ददई दुबे आदि शामिल हैं. क्षेत्रीय दलों में आजसू ने अपनी बढ़त बनाई है. पिछली बार उसने दो सीटों पर जीत हासिल की थी. इस बार पांच सीटें उसके खाते में गईं. केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस की चुनाव अभियान संचालन समिति के अध्यक्ष सुबोधकांत सहाय अपना किला बचाने में सफल रहे. खिजरी, हटिया और ईचागढ़ में अपने गठबंधन के प्रत्याशियों को जिताकर उन्होंने अपनी संसदीय सीट को मज़बूत किया है. सहाय के नेतृत्व में सूबे में पार्टी की सीटों में इजाफा हुआ है. दूसरी तरफ भाजपा की चुनावी कमान थामे सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा का निशाना इस बार चूक गया. अपने संसदीय क्षेत्र में भी वह पार्टी को बढ़त दिलाने में सफल नहीं हो सके. पार्टी के कद्दावर नेता सरयू राय, डॉ. दिनेश शाडंगी, रवींद्र राय जैसे प्रत्याशियों को हार का सामना करना पड़ा. बाबूलाल मरांडी ने यह सिद्ध कर दिया है कि जिसे भाजपाइयों ने वोट कटवा पार्टी की संज्ञा दी थी, वह आज सब पर भारी पड़ी. अपने गृह जनपद गिरिडीह में छह में से चार सीटों पर जीत दर्ज़ कर उन्होंने राजनीतिक परिदृश्य ही बदल दिया. झामुमो प्रमुख शिबू सोरेन का दुर्ग संथाल परगना अभेद्य रहा. प्रमंडल की 18 सीटों में से दस पर उन्हें जीत हासिल हुई. इनमें गुरुजी के बेटे-बहू ने पहली बार जीत का स्वाद चखा. इस बार के चुनाव में लाल लहर नहीं चली. माओवादी नेता विभिन्न दलों के बैनर तले चुनावी मैदान में कूदे ज़रूर, लेकिन एक सीट के अलावा बाकी जगहों पर जनता ने उन्हें ठुकरा दिया. वामपंथी दलों में बगोदर से सीपीएमएल के विनोद सिंह और निरसा से मार्क्सवादी समन्वय समिति के अरूप चटर्जी ने जीत दर्ज की. पलामू प्रमंडल में सत्ता विरोधी लहर हावी रही. कई दलों के बने-बनाए समीकरण बिगड़ गए. पलामू प्रमंडल में बदलाव की बयार ने उन्हें चारों खाने चित्त कर दिया. प्रमंडल की नौ सीटों पर कहीं जातिवाद हावी हुआ तो कहीं भ्रष्टाचार मुद्दा बना. आठ सीटों पर नए प्रत्याशियों ने क़ब्ज़ा जमाया. कोयलांचल में कुंती सिंह भाजपा की लाज बचाने में सफल रहीं. कोल्हान में रघुवरदास को छोड़कर सभी दिग्गज मात खा गए. उत्तरी छोटा नागपुर में कांग्रेस-झाविमो गठबंधन का जादू चला. प्रमंडल के सात ज़िलों की 25 विधानसभा सीटों पर इस गठबंधन को 13 सीटें मिलीं. छोटे दलों ने भी बेहतर प्रदर्शन किया. राज्य गठन के बाद पहली बार महिला प्रत्याशियों की संख्या बढ़ी. सबसे अधिक भाजपा की तीन, झामुमो, जदयू, राजद और कांग्रेस की एक-एक तथा एक निर्दलीय.


नवल किशोर सिंह

feedback@chauthiduniya.com

चौथी दुनिया



पश्चिम बंगाल का प्रमुख व्यवसायी शहर सिल्लीगुड़ी है, जहां से सिक्किम एवं भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए सड़क और रेल मार्ग निकलता है. इससे सटा है बिहार का प्रमुख व्यवसायी शहर पूर्णिया, जहां बिहार की सबसे बड़ी व्यवसाय मंडी गुलाब बाग स्थित है.

नेपाल के विश्रामपुर, धोर, मिचुरा, देवरिया, श्रीपुर, पंचगांवा, रामपुर टडी, महुवन और सोनबरसा सहित दर्ज़नों गांवों में आज किसानों की मुख्य फ़सल गांजा है. यहां की महिलाएं भी गांजे की चपेट में आ चुकी हैं, जिससे कई लोगों की वंश परंपरा ही बाधित हो गई है.

चौथी दुनिया



# बिहार परिवहन विभाग को करोड़ों का चूना !



एक तरफ़ राज्य सरकार बिहार की माली हालत और राजस्व की कमी का रोना रही है, तो वहीं दूसरी तरफ़ परिवहन विभाग की लापरवाही से राज्य सरकार को प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये का चूना लग रहा है. क्योंकि सीमांचल से सटे इलाक़ों के लोग बंगाल से ही गाड़ी ख़रीद रहे हैं और निबंधन भी वहीं करवा रहे हैं. जिसके चलते सरकार को प्राप्त होने वाले करोड़ों रुपये का राजस्व बिहार सरकार के बजाए बंगाल सरकार के खाते में जा रही है.

बिहार में निबंधित वाहनों के प्रति बंगाल पुलिस के नकारात्मक रवैये से सीमांचल के किशनगंज, पूर्णिया, अररिया, कटिहार आदि ज़िले के लोग बंगाल के निकटवर्त्ती शहरों सिल्लीगुड़ी, इस्लामपुर, दालकोला, रायगंज से वाहन ख़रीदने और निबंधन करने को विवश हैं. क्योंकि बंगाल जाने पर वाहन मालिकों से वहां की पुलिस अवैध वसूली करती है और उन्हें बेवजह तंग करती है. हालांकि इन शहरों में वाहनों की बिक्री का व्यवसाय तेज़ी से बढ़ रहा है. बिहार के किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार आदि ज़िले बंगाल की उत्तरी दिनाजपुर और दार्जलिंग से काफ़ी सटा हुआ है. इस कारण परेशानी से बचने के लिए लोग वहीं से वाहन ख़रीदते हैं.

पश्चिम बंगाल का प्रमुख व्यवसायी शहर सिल्लीगुड़ी है, जहां से सिक्किम एवं भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए सड़क और रेल मार्ग निकलता है. इससे सटा है बिहार का प्रमुख व्यवसायी शहर पूर्णिया, जहां बिहार की सबसे बड़ी व्यवसायी मंडी गुलाब बाग स्थित है. यहां से सिक्कम, बंगाल समेत पूर्वोत्तर राज्यों के लिए प्रति माह करोड़ों रुपये का व्यवसाय होता है. रोज़ाना हज़ारों की संख्या में व्यवसायिक (बंगाल, सिक्किम और पूर्वोत्तर राज्यों) अपने निजी वाहन से व्यापार के सिलसिले में यहां आते हैं. बिहार के सीमांचल से चलने वाले अधिकतर व्यवसायिक वाहन पूर्णिया प्रमंडल के विभिन्न ज़िलों के परिवहन कार्यालय से निबंधित रहता है, लेकिन जब ये वाहन बंगाल के इस्लामपुर, सिल्लीगुड़ी, जलपाईगुड़ी जैसे शहरों में पहुंचते हैं, तो बंगाल पुलिस इन वाहनों के ऑरिजनल काग़ज़ात को नकली बताकर और पुलिसिया रोब दिखाकर अवैध वसूली करते हैं. वहीं बंगाल में निबंधित वाहनों में लाख खोट (दोष) रहने के बावजूद उन्हें छूते तक नहीं हैं.

ऐसा ही एक मामला 29 नवंबर 2009 को सामने आया, जब सिल्लीगुड़ी गई, पूर्णिया परिवाहन कार्यालय से निबंधित निजी बीआर 11 जी 4255 नं0 बलैरो वाहन चालक संतोष कुमार से सिल्लीगुड़ी ट्रैफिक पुलिस ने स्वाम्बी धर्मशाला के निकट झूठा आरोप लगाकर उससे 900 रुपये वसूल लिए. इसी तरह की जानकारी टाटा भिक्टा चलाने वाले चालक व गुलाब बाग जीरोमाईल निवासी बबलू ने दी, उसने बताया की धुआं परमिट के नाम पर सिल्लीगुड़ी ट्रैफिक पुलिस ने मुझसे हज़ार रुपये लिए और इसके एवज में कोई रसीद भी नहीं थमाई. ट्रक चालक रामजी ऋषि ने बताया की प्रेसर हार्न का भय दिखाकर जलपाईगुड़ी में पुलिस ने उनसे 2000 रुपये वसूले. बंगाल में परिवहन के नियम व धुआं परमिट से संबंधित जानकारी जब इस्लामपुर स्थित ट्रैफिक इंस्पेक्टर अजित सिंह से ली गई तो उन्होंने बताया की बंगाल में धुआं परमिट एक साल से अधिक पुराने वाहन पर लागू होता है, जहां तक समान्य पुलिस का सवाल है तो उसे सिर्फ़ वाहनों की वैधता का पता लगाना होता है.

वास्तव में इसके पीछे बंगाल पुलिस द्वारा बिहार समेत अन्य राज्यों के वाहनों से अवैध वसूली के लिए बनाई गई एक रणनीति है, जिसके तहत वह अपनी निजी आमदनी वाहनों को रोककर पूरा करता है. आज सीमांचल के व्यवसायियों से लेकर आमजनों की हालत यह है कि जिनके व्यवसाय और पारिवारिक संबंध बंगाल से जुड़े हैं. वैसे लोग वाहनों की ख़रीद से लेकर निबंधन तक बंगाल में ही कराने में भलाई समझते हैं, ताकि उन्हें अपने निजी वाहन से बंगाल जाते वक़्त किसी प्रकार की दिक़्क़त नहीं हो.

आज हालात यह है कि सीमांचल के किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार, अररिया आदि ज़िलों में बंगाल नंबर के दो पहिया, चार पहिया और भारी वाहनों की भरमार हो चली है. यहां तक कि किशनगंज ज़िले में स्थित निजी चाय बगानों में चाय की पत्ती ढोने के लिए सारे पिकप वाहन बंगाल के हैं. वर्तमान में निबंधन का सारा राजस्व बंगाल को मिल रहा है, जबकि वाहनों का उपयोग धड़ल्ले सीमांचल में हो रहा है.

बिहार सरकार को परिवहन व्यवसाय से होने वाली राजस्व की हानि के बारे में किशनगंज स्थित ज़िला परिवहन पदाधिकारी सह एसडीओ और पूर्णिया स्थित ज़िला परिवहन पदाधिकारी दरोगी यादव से पूछा गया तो उन्होंने बंगाल निबंधित बिना परमिट के व्यवसायिक वाहनों की धड़-पकड़ की बात कही. वहीं बिहार निबंधित निजी और परमिट वाले व्यवसायिक वाहनों को बंगाल पुलिस द्वारा बेवजह तंग किए जाने को लेकर बिहार एवं बंगाल के परिवहन मंत्री के बीच की वार्ता को आवश्यक बताया.

सीमांचल के स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर किशनगंज ज़िला प्रशासन चाहे तो बिहार सरकार के राजस्व में काफ़ी इज़ाफ़ा हो सकता है, क्योंकि बंगाल निबंधित व्यवसायिक ट्रक और कई बसें बिना बिहार परमिट के किशनगंज होकर कोलकाता, रायगंज, मालदा और बंगाल के अन्य शहरों में हज़ारों की संख्या में जाते हैं, लेकिन इस संबंध में किशनगंज के परिवहन विभाग की भूमिका संदेहास्पद लग रही है.

सीमांचल के बिहार निबंधित निजी और व्यवसायिक वाहनों के मालिक का गुस्सा बंगाल पुलिस के प्रति धीरे-धीरे बढ़ रहा है. समय रहते अगर दोनों राज्यों की सरकार इस ओर ध्यान नहीं दिया तो कभी भी स्थिति विस्फोटक हो सकती है. क्योंकि उत्तर बंगाल के सिल्लीगुड़ी जैसे प्रमुख शहरों से दक्षिण बंगाल एवं कोलकाता जैसे शहरों में जाने के लिए बंगाल के वाहनों को बिहार के किशनगंज से होकर गुज़रना पड़ता है. अतः यह मुद्दा धीरे-धीरे दोनों राज्यों की बीच कहीं विवाद की जड़ न बन जाए.

नीरज कुमार सिंह
feedback@chauthiduniya.com

# अन्न के बदले गांजे की सौगात





मनोज कुमार राव

एक तरफ़ भारत है जो नेपाल को अन्न एवं उर्वरक देकर पड़ोसी होने का फ़र्ज़ निभा रहा है, वहीं दूसरी तरफ़ नेपाल भारत में अवैध तरीक़े से गांजा भेजकर यहां के माहौल में ज़हर घोल रहा है. रक्सौल की सीमा से जुड़े नेपाल के बारा और परसा ज़िले के दर्ज़नों गांवों में लहलहा रही गांजे की फ़सल भारतीय युवकों को नशे की एक ऐसी दुनिया में ले जाने के लिए तैयार है, जहां बर्बादी के अलावा कुछ भी नहीं है.

पूर्वी चंपारण के तेतरिया, संग्रामपुर, अदापुर, छौड़ादानो और पश्चिम चंपारण के सिसवा, मुसहरी, लौकरिया एवं नांहोसति सहित कई गांवों में गांजे की खेप नियमित रूप से पहुंचती है. इसे एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाने के लिए अधेड़ और ग़रीब महिलाओं को इस्तेमाल किया जाता है. सद्भावना और सप्तक्रांति एक्सप्रेस ट्रेनों में सफ़र कर रहीं ऐसी ही कुछ महिलाओं ने बताया कि पुलिस और अन्य अधिकारियों को तयशुदा रक़म समय से पहुंचा दी जाती है, इसलिए कोई हमें परेशान नहीं करता. जब उनसे पूछा गया कि इस काम में उन्हें डर नहीं लगता? उन्होंने कहा कि इसमें डरने की क्या बात है? हम लोग नेपाल और भारत दोनों ही देशों में अधिकारियों की जेब गरम करते हैं. रेल की बोगियों में स्लीपर के नीचे गांजे से भरी गठरियां और बोरियां रख देते हैं. मुजफ़्फ़रपुर, मोतिहारी, मेहसी और बेतिया में हमारे लोग हमारा इंतज़ार कर रहे होते हैं. वे हमसे माल ले लेते हैं और उसे जहां पहुंचाना होता है, पहुंचा देते हैं.

इस नेटवर्क में महिलाओं की संख्या काफ़ी अधिक है. सिर्फ़ चंपारण में तीन सौ से अधिक महिलाएं इस नेटवर्क से जुड़ी हैं. पकड़े जाने पर दलाल और अधिकारी उनकी मदद करते हैं. सुंदरी, रमावती, अनोखी, रुख़साना, रामबानो, रूमाली, जया और सीमा ने बताया कि हमें दिन भर में दो सौ रुपये मेहनताना मिल जाता है.

किसान रघुवीर, अशोक, प्रेमचंद, सच्चिदानंद और राम अवतार ने बताया कि स्थानीय नेपाली प्रशासन पैसा लेकर गांजे की खेती करने की छूट दे देता है. उन्होंने बताया कि नेपाल में गांजे से तैयार अफीम भारत में पहुंचाई जाती है, क्योंकि यहां इसकी खपत सबसे अधिक है.

कोई भी माह ऐसा नहीं बीतता, जब सीमावर्ती क्षेत्रों में नेपाली गांजा पकड़ा न जाता हो. 6 अप्रैल 2009 को 470 किलो गांजा भारतीय क्षेत्र में पकड़ा गया, जिसकी क़ीमत आठ लाख सत्तर हज़ार रुपये आंकी गई. 15 अप्रैल को 12 किलो, 24 जून को 40 किलो, एक जुलाई को 70 किलो, 4 जुलाई को 100 किलो, 23 जुलाई को 300 किलो, 9 अगस्त को 225 किलो, 13 अगस्त को 70 किलो और 24 अगस्त को 27 किलो गांजा पकड़ा गया. नेपाल में इस खेती में सबसे अधिक शोषण बच्चों का होता है. उनका काम खेतों से कच्चा माल ढोना, उसे तैयार कर पैकेट बनाना और उसके बाद उसे गंतव्य तक पहुंचाना है. गांजा उपजाने वाले किसानों ने बताया कि उक्त ग़रीब और मजबूर बच्चे अक़्सर असाध्य रोगों के शिकार हो जाते हैं. कई बार अग्रिम भुगतान कर दिया जाता है, ताकि किसान आसानी से इसकी खेती में रुचि ले सकें. अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में मुंहमांगी क़ीमत पर बेचे जाने वाले इस मादक पदार्थ की चपेट में आज पूर्वी और पश्चिम चंपारण के कई शहरों के लोग आ चुके हैं.

नेपाल के विश्रामपुर, धोर, मिचुरा, देवरिया, श्रीपुर, पंचगांवा, रामपुर टडी, महुवन और सोनबरसा सहित दर्ज़नों गांवों में आज किसानों की मुख्य फ़सल गांजा है. यहां की महिलाएं भी गांजे की चपेट में आ चुकी हैं, जिससे कई लोगों की वंश परंपरा ही बाधित हो गई है. रामपति देवी ने बताया कि उनके पति कई सालों से गांजे की खेती से जुड़े हैं. रामपति की शादी को बारह साल हो गए हैं, लेकिन उसकी गोद सूनी है. डॉक्टर ने बताया कि अफीम ने उसे इस क़दर जकड़ लिया है कि अब औलाद नहीं हो सकती. पंचगांवा निवासी आनंद बहादुर थापा रक्सौल के डंकन अस्पताल में अपना इलाज कराने जाता है. उसकी उम्र मात्र नौ साल है और वह रोज़ ख़ून की उल्टियां करता है.

पूर्वी चंपारण में एसएसबी के कमांडेंट श्याम सिंह शेखावत ने बताया कि एसएसबी के जवान और अधिकारी पूरे सीमावर्ती क्षेत्र में दिन-रात ग़श्त लगा रहे हैं, ताकि तस्करी पर रोक लगाई जा सके. वह दिन दूर नहीं, जब तस्करी पर पूरी तरह क़ाबू पा लिया जाएगा.

feedback@chauthiduniya.com

# लीजा विकलांगों के लिए प्रेरणा बनी

लोग हाथों की लकीरों पर भरोसा करते हैं. लेकिन तक़दीर तो उनकी भी होती है जिनके हाथ तो क्या पांव भी नहीं होते. लीजा ख़ुशबू अपने कामों से कुछ ऐसी ही सच्चाई को प्रमाणित कर रही हैं. जब वह बच्ची थी तभी से परिवार में आर्थिक तंगी रही. माता-पिता जेपी आंदोलन में व्यस्त रहे. देखरेख की कमी रही और वह मस्तिष्क रोग का शिकार हो गई. इलाज के अभाव में वह अपना बायां पांव और हाथ भी गंवा बैठी. फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी. बचपन में उन्हें भले ही विकलांगता अभिशाप लगा हो, लेकिन आज वह विकलांगों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई हैं. हाथ-पांव से लाचार हो चुकी लीजा आज सिर्फ़ अपने लिए ही नहीं जी रही हैं, वह दूसरे विकलांग लोगों के लिए भी ज़िंदगी की उड़ान भर रही हैं.

वह बताती हैं कि महज़ एक वर्ष की आयु रही होगी तब उनकी. संभलने का मौक़ा तक नहीं मिला. जब तक उनके माता-पिता 74 के आंदोलन से वापस घर लौटते तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी और वह मेनिनजाइटिस रोग के कारण अपना हाथ- पांव गंवा चुकी थी. लीजा का हाथ-पैर देखने पर तो ठीक लगता है, लेकिन वह काम का नहीं है. इस तरह की स्थिति पैदा होने के बाद लोग अपने लिए बैसाखी को सहारा मान लेते हैं, लेकिन उनके इरादे इतने बुलंद हैं कि उन्हें बैसाखी की ज़रूरत कभी नहीं हुई. वह ख़ुद विकलांग होने के बाद भी विकलांग लोगों के लिए एक प्रेरणा बन गई हैं. किसी भी विकलांग को बैसाखी के सहारे नहीं चलने की नसीहत देती हैं लीजा. वह अपना दैनिक काम करने के बाद दूसरे लोगों की भी सहायता करती हैं.

लीजा किसान विकास ट्रस्ट के द्वारा प्रकाशित होने वाली बाल संवाद नामक मासिक पत्रिका की संपादक हैं. वह बाल संवाद जैसी पत्रिका के माध्यम से विकलांगों को आत्मनिर्भर बनाने की मुहिम चला रही हैं. लीजा ने चौथी दुनिया को बताया कि वह बचपन में जब मस्तिष्क रोग के कारण हाथ-पांव से लाचार हो गई, उस वक़्त उनके माता-पिता ने लीजा को एक ऐसी शिक्षा दी, जहां वह स्वयं तो आत्मनिर्भर हुईं ही, साथ ही अन्य विकलांगों को भी आत्मनिर्भर बनाने की ठान ली. वह कहती हैं कि ईश्वर और अल्लाह ने अगर किसी से कुछ छिना है तो उसे बहुत कुछ दिया भी है. इसलिए किसी को भी यह कहने का अधिकार नहीं है कि ईश्वर या अल्लाह ने उसके साथ इंसाफ़ नहीं किया. बिहार के बेगूसराय ज़िला अंतर्गत चंद्रपुरा गांव की रहने वाली लीजा कहती हैं कि उनके पिता प्रभात कुमार और माता अनुराधा कुमारी ने बचपन में ही सीख दी थी कि जात और मज़हब से भी ज़्यादा बड़ी पूंजी इंसानियत की होती है. इन बातों को उसने आत्मसात कर लिया और आज विकलांगों को आत्मनिर्भर बनाने की मुहिम चला रही हैं. लीजा के मुताबिक़, एक दिन वह गोवा में थी. वहां उन्होंने देखा कि एक विकलांग अपनी भूख मिटाने के लिए फेंकी गई बोतलों को इकट्ठा कर रहे हैं. जब उससे पूछा तो उनकी बातों को सुन कर मुझे रोना आ गया, लेकिन जब उन्हें जीने के रास्ते बताए गए तो उनकी आंखों में ज़िंदगी जीने की एक अलग ललक दिखी. लीजा ने आज अपनी बदौलत समाज में एक नई पहचान बना ली है. वह बताती हैं कि विकलांगों के दर्द को कोई विकलांग ही समझ सकता है. यही सोचकर वह विकलांग होने के बाद विकलांगों के लिए इस तरह की मुहिम चला रही हैं. आज लीजा अपने कर्मों से संतुष्ट हैं. उनका कहना है कि विघ्न बाधाओं को पार कर जो ज़िंदगी जीने की राह ढूंढ लेता है वही ज़िंदगी को वास्तविक रूप से जी पाता है. वैसे भी अपनों के लिए तो सभी जीते हैं, कोई दूसरों के लिए अगर जीना सीख ले तो ज़िंदगी जीने का रास्ता भी आसान हो जाएगा. उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में जब एक स्वस्थ लड़की को भी भयमुक्त समाज नहीं मिल पाता है तो ऐसे में विकलांग लड़कियों का जीना कितना संभव है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है. वह समाज के साथ-साथ सरकार से भी यही विनती करती हैं कि अगर विकलांगों के प्रति दया ही दिखानी है तो कम से कम उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की मुहिम चलानी चाहिए.

राजेश सिन्हा
feedback@chauthiduniya.com

# विस्फोटक मिलने से सनसनी फैली

विस्फोटकों को आप चाहे तो नक्सली गतिविधियों का हिस्सा मान सकते हैं या फिर कैमूर की पहाड़ियों में काले पत्थर के रूप में छुपे अकूत ख़ज़ाने को उड़ाने का सामान. विस्फोटकों को लेकर लोगों के मन में इस तरह के न जाने कितने सवाल उठ रहे हैं. पूरे इलाक़े में इसकी चर्चा काफ़ी ज़ोरशोर से हो रही है. ग़ौरतलब है कि 15 दिनों के अंदर रोहतास के सासाराम उप नगरीय करवंदिया से पुलिस ने सैकड़ों क्विंटल विस्फोटक ( अमोनियम नाइट्रेट) बरामद किए हैं. इससे चर्चाओं का बाज़ार और गर्म हो गया है. पुलिस महकमे ने इसे नक्सली गतिविधियों का हिस्सा माना है, जिसका उपयोग वह सरकारी भवनों को उड़ाने में कर सकते थे. वहीं आम लोग इसे कैमूर पहाड़ी में प्रतिदिन होने वाले अवैध विस्फोटों से जोड़कर देख रहे हैं. इन विस्फोटकों की बरामदगी से चाहे जितने भी प्रश्न उठे, लेकिन एक प्रश्न सबसे अहम है कि इतने बड़े पैमाने पर सासाराम में इन्हें लाया कहां से जाता है? 15 दिनों के अंदर सैकड़ों क्विंटल अमोनियम नाइट्रेट, 60 हज़ार डेटोनेटर, 32 कार्टून जिलेटिन, 4000 सेटी यूज, 10 बोरी इलेक्ट्रिक वायर की बरामदगी दो चरणों में हुई है, तब से यह सवाल बार-बार उठ रहा है कि इन्हें कहां से मंगाया जाता है. बात यह भी नहीं कि जहां से ये विस्फोटक बरामद हुए हैं, वहां से किसी की गिरफ़्तारी नहीं हुई, बल्कि इस मामले में आधा दर्ज़न लोग पुलिस के हत्थे भी चढ़ चुके हैं. पुलिस ने कहा कि गिरफ़्तार लोगों से पूछताछ भी हो रही है. ऐसे हालातों में पुलिस को अगर इसकी जानकारी मिली तो आपूर्तिकर्ता या आपूर्ति करने वाले संस्थान पर अब तक कार्रवाई क्यों नहीं हुई?

> 15 दिनों के अंदर रोहतास के सासाराम उप नगरीय करवंदिया से पुलिस ने सैकड़ों क्विंटल विस्फोटक (अमोनियम नाइट्रेट) बरामद किए हैं. इससे चर्चाओं का बाज़ार और गर्म हो गया है. पुलिस महकमे ने इसे नक्सली गतिविधियों का हिस्सा माना है, जिसका उपयोग वह सरकारी भवनों को उड़ाने में कर सकते थे.

वैसे तो विस्फोटकों की बरामदगी और इस धंधे को संचालित करने वाले छह लोगों को पुलिस ने गिरफ़्तार किया है. गिरफ़्तारी के बाद पुलिस ने कहा कि बरामद किए गए विस्फोटकों से कम-से-कम 3000 केन बम बन जाते और संभवतः इनका उपयोग नक्सली गतिविधियों के लिए ही किया जाता. हालांकि ये विस्फोटक वहां से बरामद हुए हैं, जहां बिहार का सबसे बड़ा पत्थर उद्योग स्थापित है. यहां रोज़ाना वैध या अवैध तरीक़े से हज़ारों सीएफटी पत्थरों को विस्फोटकों के इस्तेमाल से तोड़ा जाता है. पत्थरों को तोड़ने के लिए काफ़ी अधिक मात्रा में अमोनियम नाइट्रेट, जिलेटिन, सेटी यूज, इलेक्ट्रिक वायर का उपयोग किया जाता है. इसी की आड़ में अवैध व्यवसाय भी काफ़ी दिनों से संचालित होते आ रहे हैं. हालांकि इन तथ्यों को देखकर इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि करवंदिया में बरामद विस्फोटक का उपयोग नक्सली ही करते. यह तो इसका एक पक्ष हुआ, जबकि दूसरा पक्ष यह भी है कि इसका उपयोग पत्थर के अवैध उद्योग में किया जाता. यह अलग बात है कि पुलिस इन अवैध विस्फोटक पदार्थों को बरामद कर इस प्रकरण को नक्सली गतिविधियों से जोड़ते हुए अपनी पीठ थपथपा रही है, लेकिन लोगों के जेहन में यह सवाल भी घूम रहे हैं कि पुलिस इससे जुड़े सफ़ेदपोशों तक क्यों नहीं पहुंच पा रही है? जहां से इसकी आपूर्ति होती है, पुलिस उन आपूर्तिकर्ताओं पर नकेल क्यों नहीं कस पा रही है? कहीं ऐसा तो नहीं कि इसमें तथ्यों को छिपाया जा रहा है?

ममता चौहान
feedback@chauthiduniya.com

पूर्वी चम्पारण के सभी जिला पार्षद
नगर पार्षद, समस्त जनप्रतिनिधियों,
छात्र बन्धुओं, किसान भाईयों, माताओं, बहनों
अधिकारियों व मतदाता मालिकों
को
नव वर्ष 2010 और
मकर संक्रांति
की
ढेर सारी शुभकामनायें
ये साल हम सब के लिए मंगलमय हो!
आपका
विश्वनाथ सिंह
उपाध्यक्ष
जिला परिषद, पूर्वी चम्पारण

मिथिलांचल में लोकेशन की कमी नहीं है. इसके के लिए सरकारी या निजी फ़िल्म सिटी के निर्माण की ज़रूरत महसूस की जा रही है. साथ ही भोजपुरी सिनेमा की तरह मैथिली में सिनेमा निर्माण के लिए निर्माताओं को राज्य सरकार द्वारा सब्सिडी मिलनी चाहिए.

# दुबई संकट से सीवान को झटका!

दुबई वर्ल्ड के दिवालिया होने और वहां गहराए आर्थिक संकट का असर सीवान के हज़ारों कामगारों पर भी साफ़ देखा जा सकता है. जो वहां काम की तलाश में गए थे, वे खाली हाथ अपने घर लौट रहे हैं. उनके सपने चूर-चूर हो गए. उन्हें घर लौटने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा है, जिससे अब उनके सामने रोज़ी-रोटी की समस्या उत्पन्न हो गई है. इसका असर सीवान के तक़रीबन दस हज़ार कामगारों पर पड़ा है. आलम यह है कि पिछले दो दशक से ज़िले के छोटे-बड़े उद्योग बंद पड़े हैं, जिससे युवा बेरोज़गारों को सुनहरे भविष्य के लिए विगत कई दशकों से खाड़ी देशों में नौकरी के लिए जाना पड़ता है, लेकिन दुबई आर्थिक संकट ने इन नौजवान मज़दूरों को घर-गांव लौटने को मजबूर कर दिया है. ग़ौरतलब है कि उनके घर लौटने का दौर पिछले छह महीने से जारी है.

हालांकि गांव के निर्धन और मेहनतकश युवा क़र्ज़ लेकर नौकरी की तलाश में खाड़ी देशों में जाते हैं, लेकिन इनमें कई ऐसे भी हैं जो एजेंटों और विदेश भेजने वाली एजेंसियों के चक्कर में बर्बाद हो गए और अंत में घर लौटने को विवश भी. दुबई में जब इन मज़दूरों को वेतन नहीं मिला तो उनके सामने रहने और खाने की समस्या उत्पन्न हो गई. वहां से वे किसी तरह पैसों की जुगाड़ कर घर लौटे हैं. दुबई से लौटने वाले इस ज़िले के हज़ारों मज़दूरों में बड़हरिया प्रखंड के शफी, छपरा के समीउल्लाह, जावेद अहमद, ज़ुल्फीकार अहमद, अली अख्तर आदि नाम हैं. इसी प्रखंड के गौसीहाता के फैयाज अहमद अंसारी, धर्मेंद्र कुमार शर्मा, इजमाली के फुल मोहम्मद, इश्तहाक अहमद, भेलपुर के शमीम अख्तर, जुल्फीकार अली, प्रदीप शर्मा, प्रवीण शर्मा, इरफ़ान अली, अमरूल होदा, योगेंद्र साह, तेतहली के बिंदा यादव, राजकिशोर साह और धर्मेंद्र साह हैं.



बिंदा यादव तथा निराश पिता शिवनारायण साह के पास चौकी पर बैठे दुबई से लौटे इनके पुत्र राजकिशोर और धर्मेंद्र

बिंदा अब पान की दुकान चलाते हैं, जबकि ग़रीब राजकिशोर और धर्मेंद्र दोनों भाई महंगाई के इस दौर में बेरोज़गारी का दंश झेल रहे हैं. उनके वृद्ध पिता शिवनारायण साह को अब यह चिंता चैन से सोने भी नहीं देती कि वे महाजन को क़र्ज़ के रुपये कैसे चुकाएंगे. कुछ यही दास्तां हसनपुरा प्रखंड के सेमरी गांव के मो. साजिद की है, जो दुबई से कमाई की जगह बर्बादी लेकर घर लौटे हैं. सीवान नगर के नया किला मोहल्लावासी मो. नसीम अहमद, कागज़ी मोहल्लावासी आफताब खां, मो. शमीम, पचरूखी प्रखंड के बंगाली पकड़ी के मो. रेयाजुद्दीन जैसे हज़ारों नौजवान दुबई और खाड़ी देशों से घर लौट आए हैं. उनका कहना है कि विगत वर्षों से खाड़ी देशों में अन्य देशों के कामगारों की तादाद बढ़ने से वहां की कंपनियों और ठेकेदारों ने वेतन-मज़दूरी काफ़ी कम कर दिया है. बावजूद इसके वहां काफ़ी मेहनत करते थे, लेकिन आर्थिक संकट के कारण वहां की कंपनियों-ठेकेदारों ने हमें घर लौटने पर मजबूर कर दिया. खाड़ी देशों में अधिक धन कमाने के लालच में इस ज़िले के तक़रीबन 80 हज़ार से अधिक नौजवान काम करते थे. हालांकि लौटने का सिलसिला अभी थमा नहीं है. नगर के मखदुम सराय मोहल्लावासी मो. हैदर तो पैगम्बरपुर के एजेंट पप्पू अंसारी के चक्कर में बर्वाद हो गए. उसके बड़े भाई मो. शाहजाद ने बताया कि क़र्ज़ के 70 हज़ार रुपये लेकर हैदर को बतौर पाइप फिटर इस एजेंट ने ओमान भेजवाया, लेकिन झांसा देकर उसे वहां के ठेकेदार के पास भेज दिया, जहां हैदर को कड़ी मेहनत के बाद भी उचित मज़दूरी तो दूर, उसे समय पर खाना तक नसीब नहीं होता था. वहां नौकरी कर रहे उसके रिश्तेदार ने हैदर को किसी तरह घर भेजा. इसके बावजूद यहां के नौजवान नौकरी के लिए खाड़ी देश जा रहे हैं. सिर्फ़ सीवान ज़िले में 25 से अधिक एजेंसियां और तीन सौ से ज़्यादा एजेंट हैं, जो यहां के बेरोज़गार नौजवानों को विदेश भेजवाने के कार्य में दिन-रात लगे रहते हैं. वस्तुत: खाड़ी देशों से बर्वाद होकर हज़ारों मजदूर घर लौटते रहे, लेकिन एजेंट एवं एजेंसियां मालामाल हो रही हैं. विगत कुछ वर्षों के दौरान सीवान में दर्ज़नों प्रशिक्षण केंद्र खुले हैं, जो बेरोज़गार नौजवानों को तीन से छह महीने का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र देकर खाड़ी देशों में अच्छा काम दिलाने का दावा करते रहे हैं. ज़ाहिर है, इनके ट्रेनिंग का धंधा भी ख़ूब चल रहा है. सबसे अहम यह कि बैंकों और हुंडियों के माध्यम से इस ज़िले में प्रतिमाह लगभग 35 करोड़ से अधिक रुपये खाड़ी देशों से आ रहे हैं, जिससे ज़िले के सैकड़ों गांवों में हज़ारों अच्छे पक्के मकान और कहीं-कहीं आलीशान इमारतें खड़ी हो गई हैं. महंगाई के इस दौर में भी गांवों में बने पक्के मकान ग्रामीण समृद्धि के प्रतीक हैं. मसलन पिछले कुछ सालों से प्रतिवर्ष इस ज़िले में क़रीब 35-40 हज़ार पासपोर्ट बनते रहे हैं.

feedback@chauthiduniya.com



# रानी का डबल धमाका



भोजपुरी फ़िल्म नगरी में ऐसे अभिनेताओं की लंबी फ़ेहरिस्त है, जो भोजपुरी इलाक़ों से आए हैं, लेकिन जहां तक अभिनेत्रियों का सवाल है तो एकाध नाम को छोड़कर लगभग सभी अभिनेत्रियां दूसरी भाषा की फ़िल्मों से आई हैं. मगर, अपने ठुमकों से क़यामत ढाने वाली रानी चटर्जी इस ट्रेंड में विश्वास नहीं करती. वह कहती हैं कि अगर आप में प्रतिभा है तो आपको जगह-जगह भटकने की कोई ज़रूरत नहीं है. वैसे उनका भी कहना सही है. आज उनका नाम भोजुपरी की सबसे सेक्सी और प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों में शुमार है और उन्होंने भोजपुरी फ़िल्मों के अलावा और कहीं काम भी नहीं किया है. यानी ब्यूटी विद ब्रेन. अभी तक उनका नाम *ससुरा बड़ा पैसा वाला और मुन्ना पांडे बेरोज़गार* जैसी ब्लॉकबस्टर फ़िल्मों में अभिनय के लिए जाना जाता था, लेकिन अब वह सिर्फ़ अभिनेत्री ही नहीं बल्कि आइटम गर्ल बनकर भी धमाका कर रही हैं.

[illegible]

पिछले दिनों फ़िल्म *हम बाहुबली* में रवि किशन के साथ फ़िल्माए गए आइटम सांग पर उनके डांस और अदाओं के चर्चे थमने का नाम नहीं ले रहे. आलम यह है कि अब हर निर्माता-निर्देशक यही चाहता है कि रानी उनकी फ़िल्मों में एक्टिंग के साथ-साथ एक मसालेदार आइटम भी करें. पर रानी की मंशा कुछ और है. वह कहती हैं कि *हम बाहुबली* का आइटम उन्होंने अपने एक क़रीबी मित्र के कहने पर किया था. वह तो सिर्फ़ एक्टिंग पर ही ध्यान देना चाहती हैं. ख़ैर मित्र के कहने पर ही सही, उनकी लोकप्रियता में तो इज़ाफ़ा हुआ है. अब उनकी पांचों उंगली घी में है. वह चाहे एक्टिंग करें या फिर आइटम डांस, हम तो भोजपुरिया पर्दे पर उनके जलवों से रूबरू होते रहेंगे.

feedback@chauthiduniya.com

# मैथिली फ़िल्म उद्योग को मुक़ाम की तलाश



अ [illegible]



feedback@chauthiduniya.com